नारद जी चुनाव के चक्कर में

श्याम मोहन अस्थाना

फूलों की तरह नाटकों की भी कई किस्में होती हैं। सबसे पहले रोमांटिक नाटक होते हैं—बेहद मीठे और मन को गुदगुदाने वाले, जैसे शीरे में डूबे गुलाब जामुन। पर बुरा हो जमाने का अब शुद्ध प्रेम कविताएँ या नाटक कम लिखे जाते हैं। इनमें शक्कर बहुत होती है। लोगों को डायबिटीज़ का डर रहता है।

दूसरी धारा हास्य नाटकों की होती है। ये बेहद चटपटे होते हैं—खूब हँसाते हैं। पर मन पर लकीरें नहीं छोड़ते। मंच पर प्रकाश बुझते ही सब कुछ खत्म हो जाता हैं।

तीसरी शाखा व्यंग्य नाटकों की है। ये नाटक हँसाने के साथ-साथ चिकोटी भी काटते हैं। पर यह सारा लेखन कभी-कभी पिन की तरह चुभता है और खून निकल आता है।

श्याम मोहन अस्थाना ने तीनों धाराओं का अजीब मिक्स तैयार किया है। इनके नाटक दर्शकों को एक साथ हँसाते, गुदगुदाते और चिकोटी काटते हैं। ये हमें सोचने के लिए भी मजबूर करते हैं।

तरह
हैं।
है-
व

नारद जी चुनाव के चक्कर में

नारद जी चुनाव के चक्कर में

श्याम मोहन अस्थाना

राधारानी प्रकाशन

दिल्ली–110032

© श्याम मोहन अस्थाना

मूल्य : 100 रुपये

प्रथम संस्करण : 2002

प्रकाशक
राधारानी प्रकाशन
29/61, गली नं. 11, विश्वास नगर
दिल्ली-110032

शब्द-संयोजक : प्रतिभा प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-32

NARAD JI CHUNAY KE CHAKKAR MEIN ***(Play)***
by Shyam Mohan Asthana
Rs. 100.00

कुशल एवं समर्पित प्रकाशक
स्व. हरीश कुमार शर्मा
को।

अनुक्रम

हिसाब-किताब	9
नारद जी चुनाव के चक्कर में	21
मुकदमा	43
एक लड़का, एक लड़की और एक झूठी खबर	57
मुहब्बत—नई स्टाइल	71
लैला और मजनू के बीच एक टेलीफोन	83

हिसाब-किताब

(आकाशवाणी से प्रसारित)

पात्र

मुकर्जी	:	प्रिंसिपल
मोहन	:	चपरासी
युधिष्ठिर कुमार	:	युवक
पांडे जी	:	इतिहास शिक्षक
सरदार अमृत सिंघ	:	भूगोल शिक्षक
मिस बनर्जी	:	गणित शिक्षिका
मिस नायर	:	नैतिक शिक्षा की टीचर

[स्थान : प्राचार्य कक्ष। समय : सुबह दस बजे। दरवाजे पर चपरासी मोहन खैनी मल रहा है। एक बेंच गिरने की आवाज। हँसी और शोर। प्राचार्य घंटी बजाते हैं। मोहन का प्रवेश।]

मोहन : जी सरकार!

प्राचार्य मुकर्जी : ये छेला लोग क्यों हंगामा कोरता है ?

मोहन : सरकार, एगो बेंच टूट गइल बा। जे गिरल बाड़न, रोवत बाड़न। जे ना गिरल, हँसत बाड़न।

प्राचार्य : सत्यानाश! एक बेंच रोज भाँगेगा तब तो स्कूल का साढ़े-सत्यानाश हो जायगा।

मोहन : सरकार, इतिहास के मास्टर पांडे जी ना आइल बाड़न! लड़का लोग एही से हल्ला करत बा!

प्राचार्य : ये हिस्ट्री-टीचर तो विचित्र मानुस! जिज्ञासा करने पर बोलेगा कि सर, इतिहास तो हमेशा पीछू-पीछू चलता है। नानसेंस!

मोहन : सरकार, उ का कहाला एगो सज्जन आइल बाड़न!

प्राचार्य : सज्जन हो या दुर्जन, हम अभी भेंट नहीं कोरेगा।

मोहन : सरकार, देरी से बैठल बाड़न!

प्राचार्य : देरी से बैठा है···कोनो स्टुडेंट है ?

मोहन : नाही सरकार, सटूडेंट से बड़ा बाड़न!

प्राचार्य : कोनो गार्जियन है ?

मोहन : ना सरकार, गर्जियन से छोट बाड़न!

प्राचार्य : तुम हमसे मसखरी कोरता है ? अरे बाबा, स्कूल में चाहे स्टूडेंट आता, चाहे गार्जियन! तीसरा कौन आएगा!

मोहन : सरकार, ई तीसर अमदी बाड़न! कौनो नवटंकी वाला लगेलन।

प्राचार्य : ओ रे बाबा, कोई फसाद-वसाद तो नहीं कोरेगा।

मोहन : मालूम नहीं, सरकार। कहत रहन कि प्रिंसिपल साहब से हिसाब-किताब करे के बा।

प्राचार्य : बूझ गया! बूझ गया! सेंट-परसेंट गार्जियन है। ताड़ाताड़ी ले आओ!

मोहन : ठीक बा, सरकार!

[मोहन युधिष्ठिर कुमार को लाता है।]

कुमार : नमस्कार, मुकर्जी साहब!

प्राचार्य : नोमस्कार, आप कैसे-कैसे आता!

कुमार : प्रिंसिपल साहब, लगता है कि आपने मुझे नहीं पहचाना।

प्राचार्य : देखो भाई, पचपन-छप्पन का उमिर हुआ। अब एतना मेमोरी कहाँ से लायेगा!

कुमार : मैं आपके स्कूल का पुराना स्टूडेंट हूँ। दस साल हुए मैंने आपके स्कूल से मैट्रिक पास किया था।

प्राचार्य : ओ आच्छा-आच्छा! वेरी गुड!

कुमार : मैं स्कूल क्रिकेट टीम का कैप्टेन था। मैंने इंटर-स्कूल टूर्नामेंट को सेंचुरी बनाया था। स्कूल को बिहार शील्ड मुख्यमंत्री ने दिया था।

प्राचार्य : ओ वेरी गुड, वेरी गुड!

कुमार : मुखार्जी महोदय, मैं स्कूल रंगमंच का टाप आर्टिस्ट था। 'ध्रुवस्वामिनी' में मैंने वही पार्ट किया था जिसे अब अमिताभ बच्चन ने किया है—मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है!

प्राचार्य : ओ हाऊ नाइस! द स्कूल इज़ प्राउड ऑफ यू! योर गुड नेम?

कुमार : लोग मुझे युधिष्ठिर कुमार कहते हैं।

प्राचार्य : वेरी गुड, मिस्टर कुमार! तुमको कोई सर्टिफिकेट चाहिए?

कुमार : ओह नो-नो, मुझे कोई सर्टिफिकेट नहीं चाहिए। मैं तो आपके सभी सर्टिफिकेट लौटाने आया हूँ।

प्राचार्य : कि बोलचेन मोशाय! कुछ भाँग-वाँग खाकर तो नहीं आया। एई असंभव व्यापार!

कुमार : कुछ असंभव नहीं है। मैंने पूरे दस साल आपको फीस दी है। आपने मुझे कुछ नहीं सिखाया है।

प्राचार्य : शट अप! आई से शट अप! इट इज़ इंपौसिबुल! यू कैन गो, मि. कुमार!

कुमार : नहीं मुखार्जी महोदय, मैं खाली हाथ नहीं लौटूँगा। पैसे नहीं मिलने पर, जानते हो, क्या होगा!

प्राचार्य : कि होबे! तुम क्या कोरेगा?

कुमार : मैं आप सभी पर चीटिंग यानि दफा 420 का मुकदमा चलाऊँगा!

प्राचार्य : ओ माँ, सर्वनाश!

[इतिहास शिक्षक पांडेय जी का प्रवेश।]

पांडे : गुड मार्निंग सर, कुछ प्रॉब्लेम है।

प्राचार्य : एई स्कूल का एक्स स्टूडेंट। दस साल सड़क का धूल खाया। अब बोलता है कि टोटल फीस वापस करो।

पांडे : सर, स्कूल के इतिहास में पहली बार एक पागल आया है।

कुमार : इतिहास की चर्चा मत कीजिए, पांडे जी! स्कूल में देर से आना और जल्दी जाना। यही आपका इतिहास है।

पांडे : इतिहास हमेशा घोड़े की पीठ पर चढ़ कर आता है। कभी धीरे, कभी तेज चलता है। तुम परीक्षा में पास कर गए। समझो कि तैमूर को कोहनूर मिल गया।

कुमार : मैं परीक्षा में कैसे पास हुआ, इसका जिक्र मत करिए। पाँच किलो किताब, पाँच हेल्पर, पाँच पैरवीकार—जी हाँ, इसके बिना मैं परीक्षा पास नहीं करता।

पांडे : देखो मि. कुमार, अरस्तू ने सिकन्दर को सिखाया। अच्छी-अच्छी किताबें लिखीं। पर सिकन्दर ने नहीं सीखा। इसमें अरस्तू का क्या कसूर था? तुलसीदास ने कहा है—हानि-

लाभ, जीवन-मरण, जस-अपयस विधि हाथ!

कुमार : कृपया तुलसीदास की टाँग मत तोड़िए। आपने हमें कुछ नहीं सिखाया। अब उचित यही है कि आप दस साल की फीस जोड़कर पाई-पाई लौटा दें।

प्राचार्य : ओ माँ, कि रकम बोलचे!

पांडे : सर, इस मामले को तय करने के लिए स्टाफ की एक मीटिंग बुला लें।

प्राचार्य : गुड आइडिया! मि. कुमार तुम बाहर वेट करो!

कुमार : ठीक है, मैं बाहर वेट करता हूँ। पर याद रखिए, पैसा लिये बिना मैं नहीं जाऊँगा।

[कुमार का प्रस्थान। प्राचार्य घंटी बजाते हैं। मोहन का प्रवेश।]

मोहन : जी सर!

प्राचार्य : देखो सभी टीचर को ताड़ातड़ी बुला लाओ!

मोहन : सरकार, ढेर लोग छुट्टी में गइल बा। इतिहास के पांडे जी बाड़न। गणित के मिस बनर्जी बाड़ी, अउर का कहाला भूगोल के सरदार जी बाड़न। अउर मिस नायर बाड़ी।

प्राचार्य : माई गौड, इतना लोग छुट्टी पर गया। बाकी लोग को ताड़ातड़ी लाओ।

[मोहन का प्रस्थान।]

प्राचार्य : पांडे जी, ये स्टूडेंट हमको ब्लैकमेल कोरता!

पांडे : सर, यह पानीपत की चौथी लड़ाई है। अगर हम हार गए तो सभी स्टूडेंट फीस माँगने आ जाएँगे।

प्राचार्य : ओ माँ, तब तो साढ़े सत्यानाश होता।

[सरदार अमृत सिंघ, मिस बनर्जी एवं मिस नायर का प्रवेश।]

सरदार : गुड मार्निंग सर!

प्राचार्य : गुड मार्निंग!

मिस बनर्जी : नोमस्कार सर!

प्राचार्य : नोमस्कार!

नायर : नमस्कारम्!

प्राचार्य : नमस्कारम्! बोसून! बोसून!

सरदार : सर, सुना है कि कोई उल्लू का पट्ठा आया है?

प्राचार्य : देखो भाई, बड़ा सीरियस प्रॉब्लम है! स्कूल का एक स्टूडेंट दस साल पहले मैट्रिक पास किया। दस साल इधर-उधर भटका। अब बोलता है कि अपना सर्टिफिकेट वापस लो। हमारा फीस जोड़ कर रिफंड करो!

बनर्जी : ओ फाइन! वेरी फाइन! ये तो फिलिम के माफिक स्टोरी होता।

सरदार : सर, वह उल्लू का पट्ठा इम्तिहान में बैठा और पास हुआ।

प्राचार्य : हाँ, सो तो हुआ।

सरदार : तब पुत्तर कैसे कहता कि कुछ नहीं सीखा।

नायर : अय्ययो, यही तो प्वाइंट है! रीयल प्वाइंट!

प्राचार्य : वह पाँच साल एक फर्म में रहा। उसने इसे निकाल दिया। बोला तुम अयोग्य मानुस! स्कूल से कुछ नहीं सीखा। बिल्कुल जीरो!

सरदार : फरम का मनेजर साला स्कूल के बारे में गल्ल करता। उल्लू का पट्ठा, पिटाई खोजता है।

नायर : अय्ययो, ये मामला तो बहुत काम्पलीकेटेड होता।

पांडे : सर, एक बात हो सकती है। हम उसका स्पेशल एग्जैमिनेशन ले लें।

प्राचार्य : ठीक बोलचेन। परीक्षा से तय हो जायगा कि उसने स्कूल से कुछ सीखा या नहीं।

बनर्जी : सर, अगर वह फेल हो गया तबे कि होबे।

प्राचार्य : ओ माँ, यही प्राब्लेम है।

पांडे : नो-नो, हम उसे फेल होने नहीं देंगे। उसे अस्सी परसेंट से ऊपर नम्बर देंगे।

प्राचार्य : बस-बस तय हो गया। हम उसको फेल होने नहीं कोरेगा।

[प्राचार्य घंटी बजाते हैं। कुमार का प्रवेश।]

प्राचार्य : मि. कुमार, तुम्हारा चार्ज है कि तुम स्कूल से कुछ नहीं सीखा। हमारा स्कूल टाउन का बेस्ट स्कूल है।

कुमार : यह सरासर झूठ है। टोटल लाई!

प्राचार्य : ठीक है, हम तुमको एक और चांस देगा। तुम्हारा टेस्ट लेगा।

कुमार : टेस्ट! तो आप मुझे फिर चीट करना चाहते हैं।

प्राचार्य : शट अप। बोलो, तुम्हें यह परीक्षा मंजूर है या नहीं।

कुमार : आप सौ परीक्षाएँ ले लें, कुछ होने जाने को नहीं है।

पांडे : तुम लिखित परीक्षा में बैठोगे या ओरल टेस्ट होगा!

कुमार : मैं लिख कर कुछ नहीं दूँगा। आप चाहें तो ओरल टेस्ट ले सकते हैं।

प्राचार्य : ठीक है। पांडे जी पहला सवाल पूछेंगे।

पांडे : अच्छा मि. कुमार, बोलो—अकबर के दादा और परदादा का क्या नाम था?

कुमार : अजब सवाल है। पांडे जी आपके दादा और परदादा का क्या नाम था?

पांडे : सवाल मैं पूछूँगा या तुम।

कुमार : दोनों सवाल पूछ सकते हैं। याद है, एक दिन मैंने आपसे बाबर के बारे में सवाल पूछा था और आप अपना सिर खुजा रहे थे।

पांडे : कुमार ने ठीक जवाब दिया है। अकबर के दादा का नाम बाबर था।

कुमार : पांडे जी, शतरंज की चाल मत चलिए। सीधा सवाल पूछिए।

पांडे : चलिए, दूसरे सवाल का जवाब दो। पानीपत की तीनों लड़ाइयाँ कहाँ लड़ी गई थीं।

कुमार : पांडे जी, कुर्सी पर बैठते ही आपकी नाक बजने लगती थी। मैं पानीपत नहीं गया हूँ। पर आपकी नाक की आवाज से पानीपत की लड़ाई का पूरा मजा आ जाता था।

पांडे : कुमार ने उत्तर दे दिया। पानीपत की तीनों लड़ाई पानीपत

में लड़ी गई थी। मैं इसे अस्सी नम्बर देता हूँ।

प्राचार्य : सरदार जी, अब आप भूगोल का सवाल पूछें।

कुमार : आइए सरदार जी, आप भी बैटिंग कर लीजिए। याद है न, मैंने आपका विकेट जीरो पर उड़ा दिया था।

सरदार : पुत्तर, आज मैं तेरा विकेट उड़ा देता हूँ। बोल, दुनिया की सबसे ऊँची चोटी कौन-सी है ? उसे किसने जीता था ?

कुमार : सरदार जी, मैं जानता हूँ पर बताऊँगा नहीं। मैं काठमांडू में तेन सिंह के स्वागत में गया था!

सरदार : कुमार ने ठीक जवाब दिया है। एवरेस्ट का विजेता तेन सिंह था। मैं कुमार को पचासी नम्बर देता हूँ।

प्राचार्य : अच्छा अब मिस बनर्जी गणित की परीक्षा लेंगी।

बनर्जी : ठीक है सर! बोलून कुमार!

कुमार : बोलून मिस बनर्जी! आपका काला पर्स क्या हुआ ? आप उसे खोलकर नाक पर पाउडर लगाती थीं!

बनर्जी : ओरे बाबा, कि रकम बोलचेन! एकटू प्रश्न बोलची। एक घड़ा दस मिनट में भरता है। चार घड़ा केतना टाइम में भरने सकता।

कुमार : मिस बनर्जी, ये घड़ा कभी नहीं भरेगा!

बनर्जी : केनो, बोलो क्यों ?

कुमार : स्कूल के सभी घड़े फूटे हुए थे। उन पर मैं ही निशाना लगाता था।

बनर्जी : स्कूल का घड़ा फूटने से कुछ नहीं होता। गणित का घड़ा हमेशा ठीक रहता है। तुम पहले सवाल में फेल हो गया।

प्राचार्य : मिस बनर्जी, तुमी कि कोरेचेन!

पांडे : गजब हो गया। हम लोगों की योजना फेल हो गई।

बनर्जी : एकटू प्रश्न सुनून कुमार, तुम कितना पैसा माँगता है।

कुमार : पहले पाँच साल का छह सौ, दूसरे पाँच साल का बारह सौ—कुल अठारह सौ हुआ।

बनर्जी : कुमार का हिसाब ठीक है। मैं उसे पचास नम्बर, पच्चीस

नम्बर ग्रेस—कुल पचहत्तर नम्बर देती हूँ।

कुमार : माई गौड, मिस बनर्जी तुमने तो 'बम्पर' फेंक दिया।

प्राचार्य : मिस नायर, तुम नैतिक शिक्षा का सवाल कोरेगा!

कुमार : मिस नायर, कहानी सुनाने वाली बिल्ली मौसी!

नायर : चूहा जिससे डरता उसको बिल्ली बोलता। अब हम तुम्हारी मौसी नहीं, नानी है।

कुमार : प्रश्न पूछो, मिस नायर!

नायर : एक आदर्श छात्र किस माफिक होना चाहिए।

कुमार : आदर्श छात्र, आदर्श शिक्षक, आदर्श समाज—यह सब झूठी बातें हैं। कोई आदर्श नहीं होता।

नायर : अय्ययो, आदर्श छात्र होता। आदर्श शिक्षक होता। आदर्श समाज होता।

कुमार : इसका जवाब मैंने नहीं, मेरे हेल्पर ने दिया था। मैंने आपका क्लास कभी अटेंड नहीं किया।

नायर : लेकिन क्यों?

कुमार : नैतिक शिक्षा कंपलसरी नहीं थी।

नायर : तुम नैतिक शिक्षा नहीं पढ़ा। तुम इसीलिए दस साल तक भटकता रहा। (**प्राचार्य से**) सर, नैतिक शिक्षा को कंपलसरी करना होता। उसका फीस लेता।

प्राचार्य : गुड आइडिया! हम नैतिक शिक्षा कंपलसरी कोरेगा। इसका फीस चार्ज कोरेगा। बैक डेट से दस रुपिया महीना।

बनर्जी : ओ माँ, तब तो मि. कुमार के पास फीस का बारह सौ हुआ। सूद जोड़कर तीन हजार हुआ।

कुमार : नानसेंस, कहीं बैक डेट से फीस लगती है?

बनर्जी : कुमार, तुम दस साल का हिसाब माँगता। अब तुमको हिसाब और किताब दोनों के लिए तैयार होना चाहिए।

कुमार : माई गौड, मिस बनर्जी ने तो फँसा दिया। सोचना होगा। अच्छा मुकर्जी मोशाय दूसरे दिन तैयार होकर आऊँगा।

प्राचार्य : मि. कुमार, डोंट बी नरवस!

कुमार : नो-नो, बाई-बाई।

[प्रस्थान।]

प्राचार्य : थैंक यू मिस नायर! नैतिक शिक्षा के सवाल पर कुमार डाउन हो गया।

नायर : नो-नो, हम सीरियस बात बोला था। अब हम नैतिक शिक्षा का दो क्लास करेगा।

पांडे : दो क्लास क्यों?

नायर : एक स्टूडेंट के लिए, एक टीचर के लिए। अगर टीचर क्लास में नाक बजाएगा तो लड़का जरूर स्कूल का घड़ा फोड़ेगा।

[सब हँसते हैं।]

[पटाक्षेप]

नारद जी चुनाव के चक्कर में

पात्र

भगवान कृष्ण
नारद मुनि
पत्रकार मधुकर
मुखिया खदेरन सिंह
प्रो. विमला कांत तिवारी
डॉ. भगवान् मिश्रा
शालू यादव
अखबार विक्रेता

1

[स्थान : बैकुंठ लोक। समय : सुबह का समय।
हाथ में एकतारा लेकर नारद का प्रवेश।]

नारद : भज गोविन्दम्, भज गोविन्दम्, भज गोविन्दम् मूढ़मते।

[भगवान् कृष्ण का प्रवेश।]

कृष्ण : प्रणाम, मुनिवर!

नारद : आप आ गए, भगवन्!

कृष्ण : मुझे कैसे याद किया, मुनिवर ?

नारद : एक संवाद देने आया हूँ। आप यहाँ सुख की नींद ले रहे हैं। उधर आपके देश में जनता त्राहि-त्राहि कर रही है।

कृष्ण : मुनिवर, आप बहुत तनाव में दिखाई पड़ रहे हैं। कहीं आपका ब्लड-प्रेशर तो नहीं बढ़ गया है।

नारद : आप तो मजाक कर रहे हैं। पर याद रखिए कि मैं जनता का आदमी हूँ। आप भले भगवान् हों पर मैं लोगों का दुख-दर्द अधिक समझता हूँ।

कृष्ण : मुनिवर, नाराज होने की जरूरत नहीं है। आखिर आप चाहते क्या हैं ?

नारद : भारत की जनता बहुत दुखी है। लोग हर क्षण आपको पुकार रहे हैं।

कृष्ण : मैं अभी कैसे जा सकता हूँ। इधर बैकुंठ की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। मुझे एक मिनट की फुर्सत नहीं है।

नारद : लेकिन आपने वादा किया था। जब-जब भारत में धर्म की हानि होगी, मैं धर्म की रक्षा के लिए आऊँगा। अगर आप इस समय नहीं गए तो लोगों का धर्म में विश्वास उठ जाएगा।

कृष्ण : (कुछ सोचकर) ऐसा करें, मुनिवर कि इस बार आप चले जाएँ। आप ही भारत भूमि पर धर्म की स्थापना करें।

नारद : यह आप क्या कह रहे हैं! मैं भला यह काम कैसे कर सकता हूँ।

कृष्ण : क्यों आपमें किस बात की कमी है!

नारद : लेकिन धर्म की स्थापना हमेशा भगवान् ही करते हैं।

कृष्ण : नहीं, यह बात नहीं है। साधारण लोग भी धर्माचरण करके भगवान् का पद पा जाते हैं। फिर आप तो महामुनि हैं, मुनिराज नारद!

नारद : अच्छा ऐसा है। तब तो मैं जरूर जाऊँगा। हाँ एक काम करें, भगवन्!

कृष्ण : कहिए महामुनि!

नारद : वहाँ दुष्टों का दलन करना होगा। वीणा से काम नहीं चलेगा। आप थोड़े दिनों के लिए अपना सुदर्शन चक्र दे दीजिए।

कृष्ण : मुनिवर, सुदर्शन चक्र बहुत जटिल हथियार है। उसे चलाने के लिए बहुत अभ्यास की जरूरत होती है।

नारद : तब क्या होगा, भगवन्!

कृष्ण : मैं आपको परशुराम का कुठार देता हूँ।

[भगवान् कृष्ण नारद को कुठार देते हैं।]

जाइए मुनिवर, सज्जनों की रक्षा, दुष्टों का विनाश और धर्म की स्थापना कीजिए।

नारद : ठीक है भगवन्! पर काम पूरा होने पर मुझे भी भगवान् का सम्मान मिलेगा न?

कृष्ण : क्यों नहीं! अवतारों की नयी सूची बनने वाली है। आपका नाम सबसे ऊँचे स्थान पर रहेगा।

नारद : ठीक है भगवन्, अब चलता हूँ।

कृष्ण : आपकी यात्रा मंगलमय हो।

[नारद का प्रस्थान।]

[दृश्य परिवर्तन]

2

[स्थान : भारत का कोई भी शहर। समय : दिन के बारह बजे। नारद मंच पर कुठार भाँजते हुए आते हैं। पत्रकार मधुकर का प्रवेश।]

मधुकर : हैं-हैं! यह आप क्या कर रहे हैं?

नादर : कुठार चलाने का अभ्यास कर रहा हूँ। कृष्ण ने बहुत भारी कुठार दे दिया है। चलाते ही हाथ थक जाता है।

मधुकर : लेकिन आप यह सब क्यों कर रहे हैं? क्या आप किसी नाटक कंपनी के जोकर हैं?

नारद : मैं न ऐक्टर हूँ, न जोकर! मैं यहाँ धर्म की स्थापना के लिए आया हूँ।

मधुकर : लगता है कि आप किसी पागलखाने से भाग कर आये हैं!

नारद : दुष्ट, तू मुझे पागल समझता है! चल, सबसे पहले मैं तेरा वध करूँगा!

[नारद जी कुठार उठाते हैं।]

मधुकर : मेरा वध! बाप रे बाप! क्षमा कीजिए साधु देवता! मैं एक गरीब पत्रकार हूँ। मेरा परिवार बेमौत मर जाएगा।

नारद : जा, तुझे माफ किया! पर बच्चा फिर किसी ऋषि-मुनि का अनादर मत करना।

मधुकर : ऋषि-मुनि, सच बताइए कि आप कौन हैं?

नारद : मेरा नाम नारद मुनि है। मैं बैकुंठ से आ रहा हूँ।

मधुकर : आप नारद मुनि हैं। क्षमा करना गुरुदेव! मुझे कुछ मालूम नहीं था। बड़ी गलती हो गई।

नारद : जा तुझे क्षमा किया! तेरा क्या नाम है; बच्चा?

मधुकर : लोग मुझे मधुकर कहते हैं। मैं बिहार टाइम्स में एक पत्रकार हूँ।

नारद : अच्छा-अच्छा, सुखी रहो।

मधुकर : आपके दर्शन से मेरा जीवन धन्य हो गया। आप सचमुच महान हैं। आपके जैसा पत्रकार न हुआ है, न होगा।

नारद : मैं और पत्रकार!

मधुकर : हाँ, गुरुदेव! आप विश्व के सबसे महान पत्रकार हैं। आप जहाँ जाते हैं, लोग भयभीत हो जाते हैं। आपने विष्णु और शंकर को भी लड़ा दिया था।

नारद : तुम्हारा काम कैसा चल रहा है, बच्चा ?

मधुकर : बाजार बहुत मंदा है, गुरुदेव। चुनाव आ रहा है। अब शायद बाजार गर्म हो। अपना एक फार्मूला बता दो, गुरुदेव।

नारद : जरूर दूँगा। इस समय मैं एक जरूरी काम से आया हूँ।

मधुकर : कैसा काम, गुरुदेव ?

नारद : भगवान् कृष्ण ने मुझे यहाँ धर्म की स्थापना के लिए भेजा है।

मधुकर : धर्म की स्थापना! यह कैसे होगी, गुरुदेव ?

नारद : मुझे सज्जनों की रक्षा करनी होगी।

मधुकर : काम बहुत मुश्किल है, गुरुदेव। जहाँ मिनिस्टर ही नहीं, प्राइम मिनिस्टर पर भी कोरप्शन का चार्ज हो। जहाँ इम्तिहान में गार्जियन अपने लड़कों को चिट-पुर्जा पहुँचाते हों। जहाँ पुलिस के अफसर भी भ्रष्टाचार-बलात्कार में पकड़े जाते हों, वहाँ सज्जनों को खोजना बहुत मुश्किल है।

नारद : मुझे दुष्टों का दलन भी करना है।

मधुकर : गुरुदेव।

नारद : कहो शिष्य।

मधुकर : यह कुठार असली लोहे का है न ?

नारद : बिलकुल असली है।

मधुकर : तब आपको लाइसेंस लेना होगा।

नारद : यह लाइसेंस क्या बला है ?

मधुकर ; सरकार हथियार रखने के लिए आज्ञापत्र देती है। इसके लिए प्रार्थना-पत्र देना पड़ता है।

नारद : ठीक है, चलो यह लाइसेंस ले लें।

मधुकर : नहीं गुरुदेव, इसके लिए पैरवी चाहिए। पैसे लगेंगे।

नारद : पैसे तो मेरे पास नहीं हैं।

मधुकर : गुरुदेव, फिलहाल इस कुठार को कहीं रख दें। मैं इसे अच्छे दाम पर बिकवा दूँगा।

नारद : यह क्या कहते हो! फिर दुष्टों का दलन कैसे होगा?

मधुकर : सच कहूँ गुरुदेव।

नारद : कहो शिष्य।

मधुकर : गुरुदेव, इस कुठार से दुष्टों का दलन नहीं हो सकता। आपने इसे किसी पर चला दिया तो आप पर मर्डर यानि दफ़ा 302 का मुकद्दमा कायम हो जायगा।

नारद : मुझे कौन पकड़ सकता है?

मधुकर : यह न कहिए। जिला में नया कलेक्टर आया है। कहीं पीछे पड़ गया तो हथकड़ी लगा देगा।

नारद : तब क्या करना होगा, शिष्य!

मधुकर : देखिए गुरुदेव, अब देश में लोकतन्त्र आ गया है। धर्म की स्थापना हो या अधर्म की—काम क़ानूनी तरीके से होना चाहिए।

नारद : यह लोकतंत्र क्या चीज़ है, शिष्य?

मधुकर : मतलब यह कि आपको यहाँ पार्टी बनानी होगी। प्रचार करना होगा। चुनाव लड़ना होगा। अगर बहुमत मिला तो सरकार बनानी होगी। अगर बहुमत नहीं मिला तो तिकड़म करना होगा।

नारद : यह तिकड़म क्या होता है, शिष्य?

मधुकर : गुरुदेव, तिकड़म ही इस युग का धर्म है। बिना तिकड़म के अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष, कुछ नहीं मिलेगा।

नारद : तब अपना तिकड़म शुरू करो।

मधुकर : गुरुदेव, सबसे पहले अपने पक्ष में हवा पैदा करनी होगी। मैं आज ही अखबारों में आपके बारे में एक गरमागरम

फ्लैश देता हूँ। उसके बाद कुछ लोगों से मिलना होगा।

नारद : ठीक है, शिष्य। अगर यही उचित हो तो यही किया जाय।

मधुकर : ऐसा करें, गुरुदेव, इस कुठार को फिलहाल रख दें। लोग देखकर भड़केंगे। अगर पुलिस पीछे लग गई तो मुश्किल हो जायगी।

नारद : नहीं-नहीं, पुलिस की कोई जरूरत नहीं है। लो इसे रख दो।

[नारद मधुकर को कुठार देते हैं।]

मधुकर : बहुत भारी है।

नारद : हाँ, अगर मैं पहले जानता तो भगवान से नए मॉडल का कुठार माँगता।

मधुकर : कोई बात नहीं। इसका बंदोबस्त हो जायगा। चलिए, हम पहले झगड़ापुर के मुखिया, खदेरन सिंह से मिल लें। मुखिया जी के हाथ में कई सौ वोट हैं।

नारद : चलो, शिष्य।

[दोनों का प्रस्थान।]

3

[स्थान : ग्राम झगड़ापुर। समय : दिन के ग्यारह बजे। खदेरन सिंह अखबार पढ़ रहे हैं। नारद जी और मधुकर का प्रवेश।]

खदेरन : आइए-आइए मधुकर जी, ये साधु बाबा कौन हैं ?

मधुकर : ये नारद जी हैं। ईश्वरीय जीव हैं।

खदेरन : अच्छा-अच्छा! आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

[खदेरन नमस्कार करता है।]

नारद : खुश रहो, बच्चा।

खदेरन : कैसे चले, मधुकर जी! कुछ चंदा-वंदा का मामला है।

मधुकर : मुखिया जी, हम लोग बहुत जरूरी काम से आए हैं। नारद जी चुनाव लड़ रहे हैं। आपके समर्थन की जरूरत है।

खदेरन : अरे मधुकर जी, यह भी कोई बात है। जहाँ आप, वहाँ हम।

मधुकर : नारद जी ने एक दल बनाया है। धर्मराज्य दल।

खदेरन : गांधी जी ने रामराज चलाया। फिर कामराज चला। धर्मराज कोई नई पार्टी लगती है।

मधुकर : हाँ पार्टी नई है पर है जोरदार। नारद जी का बयान लगातार अखबारों में छप रहा है।

खदेरन : अच्छा मधुकर जी, साधु जी का नाम क्या हुआ?

मधुकर : लोग इन्हें नारद जी कहते हैं।

खदेरन : पूरा नाम बोलिए न!

मधुकर : पूरा नाम नारद मुनि है।

खदेरन : मुनि तो काम हुआ। जैसे मैं मुखिया हूँ। मतलब यह कि ये नारद राय हैं या नारद राम। कुछ न कुछ तो होंगे।

नारद : मुखिया जी, मैं समझ न सका।

खदेरन : मतलब यह कि जब तक जाति नहीं बोलिएगा तब तक बात कैसे बनेगी!

नारद : भाई, मैं तो मुनि हूँ। मेरी कोई जाति नहीं है।

खदेरन : आप ऋषि हों या मुनि, चुनाव लड़ना है तो एक जाति रखना ही होगा।

नारद : मैंने एक दल बनाया है।

खदेरन : दल कुछ भी हो। अगर आप जात भाई हैं तो सब ठीक है।

नारद : मुझे देश में धर्म की स्थापना करनी है। मैं जात-पात से कैसे जुड़ सकता हूँ!

खदेरन : प्रचार धर्म का हो या अधर्म का, जात के बिना कुछ संभव नहीं है।

नारद : क्या कहते हो, शिष्य ?

मधुकर : मुखिया जी ठीक कहते हैं। चुनाव के लिए सिर्फ जाति ही नहीं, जाति का समीकरण चाहिए।

नारद : शिष्य, मुझे यह सब तिकड़म जैसा लगता है।

मधुकर : बिना तिकड़म के आप नहीं जीत सकते।

खदेरन : मधुकर जी, नारद मुनि को अभी घूमने दीजिए। दो-तीन चुनाव के बाद खुद ही सीख जायेंगे।

नारद : नहीं-नहीं, मैं इतने दिन नहीं रुक सकता। मुझे जल्दी से जल्दी धर्म की स्थापना करनी है।

खदेरन : देखिए नारद जी, सभी दलों के पीछे जाति का गणित है। इसको समझे बिना जमानत भी नहीं बचेगी।

नारद : शिष्य, यह जमानत क्या होती है ?

मधुकर : गुरुदेव, अभी कई लोगों से मिलना है। फिलहाल हम चलें। आप धीरे-धीरे सब कुछ सीख जायेंगे।

नारद : ठीक है, शिष्य। चलो।

मधुकर : प्रणाम, मुखिया जी।

खदेरन : प्रणाम।

[मधुकर और नारद जी का प्रस्थान।]

4

[स्थान : प्रो. वी. के. तिवारी का निवासस्थान। समय : संध्या 4 बजे। प्रो. तिवारी टहल रहे हैं। मधुकर और नारद जी का प्रवेश।]

तिवारी : आइए, मधुकर जी, बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़े। अरे भाई अपनी सरकार के जाते ही आपने भी आना छोड़ दिया।

मधुकर : क्या कहूँ, इधर बहुत व्यस्त हो गया था। आपकी फोटो के लिए आया हूँ। पहले पेज पर देना है।

तिवारी : वेरी गुड। ये कुछ बात हुई। आपको याद होगा, कुछ दिन पहले प्रो. वी. के. तिवारी वाज़ विग न्यूज। रोज एक नई फोटो और गर्मागर्म डिस्पैच आता था।

मधुकर : हाँ-हाँ, आपकी स्टोरी छापकर न जाने कितने गधे पत्रकार बन गए।

तिवारी : कौन जानता था कि पिछला चुनाव हमें इतना महँगा पड़ेगा। किस्मत की बात है। कैसे-कैसे लोग ऐसे-वैसे हो गए, ऐसे-वैसे लोग, कैसे-कैसे हो गए।

मधुकर : कोई बात नहीं, तिवारी जी, राजनीति में उतार-चढ़ाव आता ही रहता है। इतिहास आपको कभी भूल नहीं सकता।

तिवारी : इतिहास की क्या बात करते हो। मैंने हमेशा इतिहास बनाया है। मैंने देश की राजनीति को मालगाड़ी से डाकगाड़ी बनाया है।

मधुकर : इसमें क्या शक है। आपके भाषण हमेशा चर्चा के विषय बनते थे।

तिवारी : नो, मुझे भाषण की जरूरत ही नहीं थी। मैं विपक्ष को सामने बैठाकर गाली देता था। वे सिर्फ गालियों के लायक थे। आपने सुना होगा—लात के देवता, बात नहीं मानते।

मधुकर : आपकी गालियाँ बहुत दिलचस्प होती थीं।

तिवारी : वे मौलिक गालियाँ थीं। मैंने किसी को गधा और सूअर नहीं कहा। मैंने नई गालियाँ दीं। मेरे गांडीव से लगातार गालियों के वाण छूटते थे। मैंने पूरे कौरव दल को धराशायी कर दिया था।

मधुकर : तिवारी जी, आपकी हार के क्या कारण थे ?

तिवारी : मैं हारा नहीं, मुझे हराया गया। मेरे खिलाफ चक्रव्यूह की रचना की गई। मुझे घेरने के लिए चौदह महारथी इकट्ठा हुए थे।

मधुकर : आपकी भविष्य की योजनाएँ क्या हैं ?

तिवारी : फिलहाल मैं राजनीतिक गालियों पर एक पुस्तक लिख

रहा हूँ। गालियों के सभी रिकॉर्ड तोड़कर मैं गिनीज़ बुक में स्थान पा गया हूँ।

मधुकर : यह एक महान् कार्य है।

तिवारी : लोग कहते हैं कि मैंने संसद भवन को मछली बाजार बना दिया है। भई, संसद भवन और मछली बाजार में क्या फर्क है। मछली बाजार की मछलियाँ मरी हुई होती हैं। संसद की मछलियाँ जिन्दा होती हैं। एक-दूसरे को निगलने के लिए तैयार रहती हैं।

मधुकर : नारद जी आपसे भेंट करने आए हैं।

तिवारी : क्यों, इनको मुझसे क्या काम है ?

मधुकर : नारद जी चुनाव लड़ रहे हैं। ये आपका समर्थन चाहते हैं।

तिवारी : भई, मेरी पार्टी में बॉस ही सब कुछ है। लोग मुझे बॉस का अल्सेशियन कहते हैं। पर जब यह अल्सेशियन भूकता था तो सारे गधे भागने लगते थे।

मधुकर : नारद जी आपके साथ चुनाव समझौता करना चाहते हैं।

तिवारी : मेरे साथ चलना बहुत कठिन है। मैं पूछता हूँ—क्या आप एक साँस में हजार गालियाँ दे सकते हैं ? माइक तोड़ सकते हैं ? विरोधी पक्ष पर कुर्सी चला सकते हैं ? अगर नहीं, तो आप मेरे साथ नहीं चल सकते।

नारद : लगता है कि मुझे यह सब सीखना होगा।

तिवारी : साधु जी, आपके लिए रामधुन ही ठीक है। प्रो. तिवारी बनना बहुत मुश्किल है।
हजारों साल नरगिस,
अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है,
संसद में तिवारी पैदा।

मधुकर : वाह-वाह, आपने क्या बात कही है! तिवारी जी आप धन्य हैं।

नारद : शिष्य।

मधुकर : हाँ गुरुदेव।

नारद : तिवारी जी से बात हो गई। अब हमें चलना चाहिए।

मधुकर : ठीक है, गुरुदेव।

नारद : अच्छा तिवारी जी, हम आपकी बात समझ गए। अब चलते हैं।

तिवारी : मेरी बातों को समझना आसान नहीं है। लोग मुझे एक सौ साल बाद समझेंगे।

नारद : ठीक है, तिवारी जी। अब चलते हैं।

तिवारी : थैंक यू।

[नारद जी और मधुकर का प्रस्थान।]

5

[मंच पर भगवान मिश्रा का प्रवेश। नारद जी और मधुकर का प्रवेश।]

मिश्रा : आओ-आओ जी मधुकर! बहुत दिन के बाद दिखाई पड़े।

मधुकर : जी सुना था कि मुख्य मंत्री पद से हटने के बाद आप एकांतवास कर रहे हैं।

मिश्रा : झूठ! सरासर झूठ! मैं जानता हूँ। मेरी पार्टी के लोग ही मेरी शिकायत कर रहे हैं। किसी ने ठीक कहा है—
दोस्त-दोस्त ना रहा, प्यार-प्यार ना रहा।
जिन्दगी मुझे तेरा, एतबार ना रहा।

मधुकर : सुना है, कि नई सरकार आपके ऊपर जाँच कमीशन बैठा रही है ?

मिश्रा : सुनो, तुमको एक किस्सा सुनाता हूँ। एक नेता भाषण दे रहे थे। एक श्रोता मीटिंग डिस्टर्ब कर रहा था। नेता जी ने उसे निकालने की धमकी दी। श्रोता चुप हो गया। दो मिनट

बाद फिर हल्ला-गुल्ला करने लगा। अंत में नेता जी ने उसे मीटिंग से बाहर निकलवा दिया।

इस पर श्रोता बोला—हुँह, यह भी कोई मीटिंग है। मैं इससे भी बड़ी-बड़ी मीटिंग से निकाला गया हूँ।

तो भइया न जाने कितने कमीशनों ने मुझे लपेटा पर मैं हर बार धूल झाड़कर खड़ा हो गया।

मधुकर : इस बार सरकार सीरियस है।

मिश्रा : इसके माने यह हुआ कि कुछ पैसा अधिक लगेगा। भइया, मैं सभी कमीशनों की कीमत जानता हूँ। मैं सबकों खरीद सकता हूँ।

मधुकर : लोगों का कहना है कि आपकी डाक्टरेट डिगरी जाली है।

मिश्रा : देखो भइया, यह दुनिया ही मायाजाल है। तो भगवान् मिश्रा का इंद्रजाल ही कौन-सा गुनाह है।

मधुकर : लोगों का कहना है कि आप भ्रष्टाचार के समुद्र हैं। पाँच लाख के बिना नाश्ता नहीं करते। दस लाख के बिना खाने का कौर नहीं उठाते।

मिश्रा : देखो भइया, मैं किसी से माँगने तो नहीं जाता। लोग खुद आकर भेंट चढ़ाते हैं। अगर मैं 'ना' कह दूँ तो उनका दिल दुखेगा। मैं किसी का दिल नहीं दुखाना चाहता।

मधुकर : लोगों का कहना है कि आप तिकड़म के हिमालय हैं।

मिश्रा : देखो भइया, ये सब पार्टी के दादाओं का कहना है। कोई तीन महीना गद्दी पर रहा, कोई छह महीना। मैं दस साल मुख्यमंत्री रहा। क्या यह सब सिर्फ तिकड़म से हो सकता है।

मधुकर : नारद जी, चुनाव लड़ रहे हैं। वे आपका समर्थन चाहते हैं!

मिश्रा : पर मुझे किसी के समर्थन की जरूरत नहीं है। लोग कहते हैं कि मैं बाली को मारकर सुग्रीव की तरह गद्दी पर बैठा।

यह सरासर झूठ है।

मधुकर : नारद जी ने एक नई पार्टी बनाई है!

मिश्रा : देखो भइया, मुझसे अधिक पार्टी किसी ने नहीं बनाई। पार्टी तोड़ने में कोई मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।

मधुकर : तो आप नारद जी के लिए क्या कहते हैं ?

मिश्रा : अभी मैं कुछ नहीं कह सकता। मेरे सभी ग्रह गड़बड़ हो गए हैं। मुझे एक ज्योतिषी की सख्त जरूरत है।

मधुकर : आपको ज्योतिषी नहीं, राज्यपाल के निमंत्रण की जरूरत है।

मिश्रा : बहुत समझदार हो।

मधुकर : पर बालू यादव की सरकार गिरे बिना राज्यपाल आपको कैसे बुला सकते हैं !

मिश्रा : अरे यह खिचड़ी सरकार कितने दिन चलेगी ! इसे गिराना मेरे बाएँ हाथ का खेल है।

मधुकर : अच्छा मिश्रा जी, चलते हैं।

मिश्रा : ठीक है, जाओ। पर मेरे इंटरव्यू को अच्छी तरह से छापना।

मधुकर : जी हाँ, जरूर।

[मधुकर और नारद जी का प्रस्थान।]

6

[स्थान : मुख्यमंत्री, बालू जादव की कोठी। समय : सुबह 8 बजे। बालू जादव टहल रहे हैं। मधुकर और नारद जी का प्रवेश।]

जादव : कहो मधुकर, कहाँ-कहाँ घूम आये ?

मधुकर : नहीं जादव जी, सीधे आपके पास आ रहा हूँ।

जादव : अरे भइया, मैं बालू जादव हूँ। सब जानता हूँ। सुना है कि

भगवान मिश्रा ज्योतिषियों के पास घूम रहे हैं।

मधुकर : हाँ, ज्योतिषियों का धन्धा खूब चल रहा है।

जादव : लेकिन मैं किसी ज्योतिषी के पास नहीं जाता। मैं जे. पी. का शिष्य हूँ। संपूर्ण क्रांति में विश्वास करता हूँ।

मधुकर : मिश्रा जी का कहना है कि आपकी सरकार को गिराने के लिए विरोधी दल की जरूरत नहीं है। आपके समर्थक ही सरकार गिराने के लिए काफी हैं।

जादव : देखो ब्रदर, मिश्रा जी कॉलेज की कुर्सी से सरकार की कुर्सी पर आए थे। कुर्सी खोकर उन्हें तकलीफ हो रही होगी।

मधुकर : मुख्यमंत्री की कुर्सी खोकर आपको भी दुख होगा।

जादव : बिलकुल नहीं, पर मैं तो भैंस की पीठ से उठकर सरकारी कुर्सी पर बैठा हूँ। जब यह कुर्सी नहीं रहेगी तो फिर भैंस की पीठ पर बैठ जाऊँगा।

मधुकर : वाह-वाह! जादव जी, आप बातें साफ-साफ करते हैं।

जादव : हाँ ब्रदर, मैंने सरकारी अफसरों से भी कह दिया है कि हमसे अंग्रेजी में गिटपिट न करें। हमरा से भोजपुरी में बतियाईं।

मधुकर : आपसे लोग बहुत डरते हैं।

जादव : पर मैं किसी से नहीं डरता। मैंने दरवाजे पर एक भैंस बाँध दिया है। कभी-कभी भैंस की पीठ पर बैठकर बिरहा गाता हूँ।

मधुकर : नारद जी चुनाव लड़ रहे हैं। आपका समर्थन चाहते हैं।

जादव : देखो ब्रदर, मैं अपना समर्थन दे सकता हूँ पर पार्टी के समर्थन के लिए जगदम्बा राम से बात करना होगा।

नारद : पर जगदम्बा राम ने पद से इस्तीफा दे दिया है।

जादव : तब उनके बेटे चारखंभा से बात करना होगा।

नारद : पर चारखंभा खुद चुनाव लड़ रहे हैं।

जादव : तब उनके लड़के तीनखंभा राम से मिलना होगा।

नारद : पर तीनखंभा पर बहुत से चार्जिज हैं।

जादव : देखो ब्रदर, पार्टी की बात छोड़ो। मैं समर्थन करूँगा। अगर जीते तो दोनों कुर्सी पर बैठेंगे। अगर हारे तो भैंस की पीठ पर आसन लगाएँगे।

मधुकर : ठीक है जादव जी, अब चलते हैं।

जादव : देखो ब्रदर, मैं साफ-साफ बात करता हूँ। बुरा मत मानना।

मधुकर : नहीं-नहीं, बुरा मानने की क्या बात है!

[जादव जी का प्रस्थान।]

नारद : शिष्य, अब कहाँ जाना होगा ?

मधुकर : चलिए गुरुदेव, मिस्टर राव से मिलते हैं।

नारद : ये मिस्टर राव कौन हैं, शिष्य ?

मधुकर : भारत के प्रधानमंत्री, ए. बी. सी. डी. राव। लोग इन्हें कोर्ट-कमेटी राव भी कहते हैं।

नारद : चलो शिष्य।

7

[स्थान : प्रधानमंत्री, राव की कोठी। समय : सुबह 9 बजे। प्रधानमंत्री राव टहल रहे हैं। मधुकर और नारद जी का प्रवेश।]

राव : आओ जी मधुकर! ये साथ में साधु जी कौन हैं ?

मधुकर : नारद जी हैं। आपसे मिलने आए हैं।

राव : इधर कुछ दिन मैं साधुओं से बुरी तरह घिर गया था। सभी राम जन्म भूमि चाहते थे। मैंने सबको खुश कर दिया।

मधुकर : आपने सबको खुश किया या सबको नाराज किया।

राव : यही तो बात है। महात्मा लोग समझ ही नहीं पाये कि मेरी बातों से खुश हों या नाखुश।

मधुकर : लोग कहते हैं कि आपने साधुओं को कई टुकड़ों में बाँट

दिया।

राव : देखो भइया, राजनीति शतरंज का खेल है। आदमी वही है पर मोहरे बदलते रहते हैं। एक तरफ़ राम जन्म भूमि के लोग थे, दूसरी तरफ बाबरी मस्जिद का ग्रुप। मैंने दोनों को उनकी हैसियत बता दी।

मधुकर : लोग कहते हैं कि आप चौदह भाषाएँ जानते हैं।

राव : मैं पंद्रहवीं भाषा भी जानता हूँ। वह चुप्पी की भाषा है। लोग उसे मुस्कुराहट की भाषा भी कहते हैं।

राम जन्म भूमि के लोग आए। बोले—मंदिर गर्भगृह पर बनना चाहिए। मैं मुस्कुराता रहा।

बाबरी मस्जिद के मौलवी आए। बोले—मस्जिद उसी जगह बनाई जाए। मैं मुस्कुराता रहा।

मधुकर : वाह राव जी, क्या बात है!

राव : देखो भइया, 'हाँ' और 'ना' के बीच चौदह परतें हैं। मैंने एक नई भाषा ईजाद की है। मैं चौदह तरीके से मुस्कुरा सकता हूँ।

मधुकर : लोग आपको कोर्ट-कमेटी राव कहते हैं।

राव : देखो भइया, पुराने लोग बात को टालना हो तो किसी कमेटी को सुपुर्द कर देते थे। मैं यही काम कोर्ट से ले रहा हूँ। किसी भी मामले को कोर्ट को सुपुर्द कर मैं चैन की वंशी बजाता हूँ।

मधुकर : पर राव जी, आप पर लगातार भ्रष्टाचार के चार्जेज लग रहे हैं।

राव : देखो भइया, राजनीति काजल की कोठरी है। इसमें घुसने पर दाग लगेगा ही। फिर भइया, मैं महात्मा गांधी नहीं हूँ। महात्मा गांधी बनकर मैं सीने पर गोली नहीं खाना चाहता।

मधुकर : राव साहब, नारद जी चुनाव लड़ रहे हैं। आपका समर्थन चाहते हैं।

राव : देखो भइया, अभी कुछ कहना मुश्किल है। एक पागल

आदमी चुनाव आयोग की कुर्सी पर बैठ गया है। उसने हम सभी को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

मधुकर : कोई बात नहीं। आपके सामने वह नहीं टिक सकेगा।

राव : अच्छा भइया, तुर्किस्तान के फारेन मिनिस्टर आने वाले हैं। किसी दिन इत्मीनान से आओ। जम कर बात करेंगे।

मधुकर : अच्छा राव जी, चलते हैं। नमस्कार।

राव : नमस्कारम्।

[मधुकर और नारद का प्रस्थान।]

8

[स्थान : एक बगीचा। समय : कुछ देर बाद। नारद जी और मधुंकर का प्रवेश।]

नारद : शिष्य मैं तो थक गया।

[अखबार वाले का प्रवेश।]

अखबार वाला : नेशनल टाइम्स! नेशनल टाइम्स! बैकुंठ से नारद मुनि का आगमन! धर्म की स्थापना का वादा! अभी तक कोई सफलता नहीं।

नारद : यह सब क्या है, शिष्य?

मधुकर : गुरुदेव, यह मेरा डिस्पैच है।

नारद : तुमने असफलता की बात क्यों कही है?

मधुकर : यह सब कुछ नहीं है। अखबारी स्टंट है।

नारद : आगे का क्या कार्यक्रम है?

मधुकर : शाम को प्रेस सम्मेलन है।

नारद : प्रेस सम्मेलन! यह क्या होता है?

मधुकर : अखबार के प्रतिनिधि आएँगे। आपसे सवाल पूछेंगे।

नारद : वे क्या सवाल पूछेंगे, शिष्य?

मधुकर : वे आपकी नीतियों के बारे में सवाल करेंगे।

नारद : मेरी नीति तो स्पष्ट है। मैं धर्म की स्थापना करना चाहता हूँ।

मधुकर : वे आपकी विदेश नीति के बारे में सवाल करेंगे।

नारद : यह सवाल तो मुश्किल लगता है।

मधुकर : वे आपसे गृह नीति के बारे में पूछेंगे जैसे कश्मीर, उत्तराखंड या बोडोलैंड का मामला।

नारद : मुझे तो डर लग रहा है।

मधुकर : वे शेयर-स्कैंडल के बारे में भी पूछेंगे।

नारद : हे भगवान्, रक्षा करो!

मधुकर : वे आपकी पत्नी के बारे में भी पूछेंगे।

नारद : पर मेरी कोई पत्नी नहीं है।

मधुकर : सुना है आप किसी स्वयंवर में गए थे। आपने खूब मेकअप किया था।

नारद : माई गौड! लगता है कि पत्रकारों ने सब कुछ पता लगा लिया है।

मधुकर : घबराने की कोई बात नहीं है।

नारद : शिष्य, यह प्रेस सम्मेलन कैंसिल करो। मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

मधुकर : पर गुरुदेव, प्रेस वाले आते ही होंगे।

नारद : नहीं-नहीं, मैं जा रहा हूँ। अच्छा शिष्य, बाई-बाई! जरा जल्दी में हूँ।

[मधुकर और नारद का प्रस्थान।]

9

[स्थान : बैकुंठ लोक। भगवान् कृष्ण फाइल देख रहे हैं। नारद का प्रवेश।]

कृष्ण : अरे मुनिराज! बहुत जल्दी चले आए?

नारद : मुझे क्षमा करें, भगवन्! यह काम मेरे बूते का नहीं है।

कृष्ण : क्यों, क्या हुआ, महामुनि!

नारद : बस बेइज्जत होते-होते बच गया।

कृष्ण : आप बहुत जल्दी घबरा गए।

नारद : नहीं-नहीं, समय पर चेत गया। भगवन्, देवताओं के बीच काम करना आसान है, पर आदमी का तिकड़म—माई गौड, उसका कोई जवाब मेरे पास नहीं था!

कृष्ण : मुनिवर, कुठार नहीं दिखाई पड़ रहा है।

नारद : सौरी, उसे तो भूल ही गया। मेरे शिष्य ने उसे ठिकाने लगा दिया होगा।

कृष्ण : सुना है कि वे आपके स्वयंवर स्कैंडल के बारे में सवाल पूछ रहे थे।

नारद : बाप रे बाप, साफ-साफ बच गया! अच्छा चला, भगवन्!

कृष्ण : बहुत घबराए हुए हैं, मुनिवर!

नारद : जा रहा हूँ। जान बची, लाखों पाये।

[नारद का प्रस्थान।]

[पटाक्षेप]

मुकदमा

(अनेक संस्थाओं द्वारा मंचित)

पात्र

जज साहब
सरकारी वकील
सफाई का वकील
पेशकार
चपरासी
रसगुल्ला सिंह
चमचम देवी

[स्थान : एक अदालत। समय : सुबह 11 बजे। अदालत में जज साहब का प्रवेश। सरकारी वकील, सफाई के वकील और पेशकार उठकर खड़े होते हैं।]

जज : वेल मुकदमा पेश किया जाय।

पेशकार : सर, आज पहला मुकदमा है—सरकार बनाम रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी। यह एक महत्त्वपूर्ण मुकदमा है। इसे आपके आदेश से पेश करता हूँ।

जज : वेरी गुड, मुजरिम को पेश किया जाय।

चपरासी : **(नेपथ्य से)** रसगुल्ला सिंह वल्द हलवाई सिंह। चमचम देवी, पति रसगुल्ला सिंह हाजिर हों।

[चपरासी तीन बार आवाज लगाता है। रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी का प्रवेश।]

रसगुल्ला : हम हाजिर हैं, हुजूर।

चमचम : हमहूँ आ गइल बानी!

पेशकार : हाँ, आप लोग यहाँ दस्तखत कीजिए।

रसगुल्ला : ठीक है, हुजूर।

[रसगुल्ला सिंह दस्तखत करता है।]

पेशकार : और चमचम देवी।

चमचम : हम त कलम धरे ना जानी। हम त सरकार अँगूठा छाप बानी नू!

जज : वेल पी. पी. साहब, इनका जुर्म पढ़कर सुनाया जाय।

पी. पी. : हुजूर, रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी पति-पत्नी हैं। इन दोनों ने साथ मिलकर जुर्म किया है। मेरी दरख्वास्त है कि इन पर साथ-साथ मुकदमा चलाया जाय।

जज : ऐसा ही किया जाय।

पी. पी. : थैंक यू सर! अब मैं मुजरिम रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी का जुर्म बयान करता हूँ। इन लोगों ने सरकारी कानूनों, सामाजिक सिद्धांतों और आर्थिक लक्ष्यों का भुरता बना दिया है। सभी जानते हैं कि परिवार नियोजन का सवाल हमारे लिए जिन्दगी और मौत का सवाल है।

जज : यू आर राइट, वेरी राइट।

पी. पी. : लेकिन मुजरिम रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी ने जो कुछ किया है उसे बगावत कहा जा सकता है—खुल्लम-खुल्ला बगावत।

जज : दिस इज वेरी सीरियस।

सफाई का वकील : सर, हो सकता है कि मेरे मुवक्किलों को सरकारी कानूनों की जानकारी नहीं हो।

पी. पी. : डिफेंस लाइयर, कृपया चुप रहने का कष्ट करें। कानून न जानने की दलील कोई दलील नहीं होती। हरेक मुहल्ले में एक परिवार नियोजन का केन्द्र है। शहर की सभी दीवारों यहाँ तक कि बेडरूम की दीवारों पर भी लिखा है—हम दो, हमारे दो।

जज : येस, यह हमारा नेशनल स्लोगन है।

पी. पी. : वेरी राइट, सर! लेकिन इस दंपति ने इन नियमों का सिर्फ मजाक उड़ाया है। उन्होंने अपने विवाहित जीवन के पंद्रह वर्षों में पंद्रह बच्चों को जन्म दिया है।

[हँसी की आवाज।]

जज : आर्डर! आर्डर! पंद्रह साल में पंद्रह बच्चे। दिस इज़ वेरी सीरियस!

पी. पी. : येस सर, दिस इज वेरी सीरियस! अगर सभी परिवार पंद्रह-पंद्रह बच्चे पैदा करें तो देश में खड़े होने की जगह भी नहीं रह जायगी।

जज : माई गौड, व्हाट ए क्राइम! मि. रसगुल्ला सिंह और मिसेज चमचम देवी, आपको इस जुर्म के बारे में क्या कहना है!

रसगुल्ला : हुजूर बात यह है…!

पेशकार : आओ गीता पर हाथ रखकर शपथ लो। बोलो कि ईश्वर के नाम पर जो कहूँगा, सच कहूँगा। सच के अलावा कुछ नहीं कहूँगा।

रसगुल्ला : ईश्वर के नाम पर शपथ लेता हूँ…।

चमचम : देख बबुआ के बाबू, ई सब ठीक नाहीं बा!

रसगुल्ला : सर, मुझे फिर से शपथ लेने दिया जाय। मैं अपनी पत्नी चमचम देवी के नाम पर शपथ लेता हूँ कि जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा।

[हँसी की आवाज।]

जज : आर्डर! आर्डर! मि. रसगुल्ला सिंह तुमने पत्नी के नाम पर क्यों शपथ लिया?

रसगुल्ला : सर, मेरे घर में बीबी की ही हुकूमत चलती है। और सर, जब से महिला वर्ष आया है मेरे सारे मौलिक अधिकार खत्म हो गए हैं।

जज : वेरी बैड! और मिसेज चमचम देवी, तुम किसके नाम पर शपथ लोगी।

चमचम : हुजूर, हम सच बोले क कसम ना लेब!

जज : लेकिन क्यों।

चमचम : हुजूर हमार नानी कहले रही कि अपन दुलहा अउर हाकिम से पूरा सच ना बोले के चाहीं!

जज : वेरी बैड! वेरी बैड! सब जाहिल हैं।

पी. पी. : सर, इनसे जुर्म के बारे में जवाब तलब किया जाय।

जज : येस-येस, मि. रसगुल्ला सिंह तुमने अपनी पत्नी के साथ मिलकर बहुत गहरा जुर्म किया है। पंद्रह साल में पंद्रह बच्चे! माई गौड! गोया ये बच्चे नहीं, फैक्टरी का

उत्पादन हो!

सफाई का वकील : सर, अगर फैक्टरी में उत्पादन टारगेट से अधिक हो तो वर्करस् को सजा नहीं, बोनस दिया जाता है।

जज : हाँ, हम बहुत जल्दी बोनस देंगे। दोनों मुलजिमों को कड़ी से कड़ी सजा।

रसगुल्ला : हुजूर मुझे और मेरी पत्नी को अदालत में बुलाकर बहुत गलती हुई है।

जज : लेकिन क्यों?

रसगुल्ला : क्योंकि हम लोग बहुत खानदानी आदमी हैं।

पी. पी. : नानसेंस! सर, मुलजिम ने अपने को खानदानी कह कर कोर्ट का अपमान किया है।

रसगुल्ला : नहीं हुजूर, मेरा यह मतलब नहीं था।

जज : तब तुम्हारा क्या मतलब था?

रसगुल्ला : क्या कहूँ हुजूर, हमारे खानदान में तो हाथी-घोड़े भी नहीं गिने जाते थे।

जज : व्हाट नानसेंस!

रसगुल्ला : हुजूर, आप पंद्रह बच्चों से घबरा गये। मेरे पिता के पच्चीस लड़के थे। मेरे दादा के चालीस लड़के थे। मेरे परदादा—हुजूर, उनके घोड़ों, कुत्तों और लड़कों का हिसाब दीवान साहब रखते थे।

जज : मि. रसगुल्ला सिंह, वह पुराना जमाना था।

रसगुल्ला : वही सही जमाना था, हुजूर! हरेक पीढ़ी में एक नया गाँव बस जाता था।

जज : नो, यह नया जमाना है। तुम्हें बदलना ही पड़ेगा।

रसगुल्ला : सर, कुछ लोग जल्दी बदल जाते हैं। पर हम लोग खानदानी आदमी हैं।

जज : सिली मैन, मि. रसगुल्ला सिंह, तुमने पंद्रह बच्चे पैदा कर सरकारी कानून तोड़ा है। नये जमाने का नया कानून!

रसगुल्ला : हुजूर, इस जमाने में तो पंद्रह बच्चे और भी जरूरी हैं।

जज : इसका मतलब!

रसगुल्ला : हुजूर, हमारे बाप-दादा अपने-अपने बच्चों के वोट से गाँव के मुखिया बन जाते थे।

जज : देखो मिस्टर बाप-दादा के जमाने को भूल जाओ।

रसगुल्ला : हुजूर, बात सिर्फ बाप-दादा की नहीं है। आखिर मुझे भी तो असेम्बली के चुनाव में खड़ा होना है।

जज : तुम मेरी बात नहीं समझ रहे हो। दुनिया में जनसंख्या के दबाव से सामान की कमी हो रही है।

रसगुल्ला : हुजूर, जब बाजार में सामान कम हो जाय तो पंद्रह बच्चे और भी जरूरी हैं।

जज : यह तो बिलकुल उलटी बात है।

रसगुल्ला : हुजूर, जरा समझने की कोशिश कीजिए।

जज : देखो कोर्ट को बहलाने की कोशिश मत करो।

रसगुल्ला : देखिए हुजूर, जब बाजार में चीजों की कमी हो जाती है तो मैं पहले बच्चे को गेहूँ लाने भेजता हूँ। दूसरा चावल लाता है। तीसरा दाल के लिए जाता है। चौथा घी लाता है। पाँचवाँ सब्जी और छठा मसाला लाता है। सातवाँ तेल⋯!

जज : बस-बस! स्टाप इट!

रसगुल्ला : सर, आठवाँ कोयले कि लिए जाता है। नवाँ, मिट्टी का तेल और दसवाँ, दवाई का प्रबन्ध करता है। ग्यारह और बारह, बिजली और पानी की देखभाल करते हैं।

पी. पी. : ये तो कुल बारह हुए। बाकी तीन तुम्हारे पैर दबाते हैं?

रसगुल्ला : हूजूर, तेरहवाँ बच्चा खैनी का जोगाड़ करता है।

जज : और बाकी दो?

रसगुल्ला : क्या कहूँ, हुजूर! दो लड़का बिल्कुल लखैरा हो गया है। दिन-भर टी. वी. पर किरकिट का खेल देखता रहता है।

जज : माई गौड, लगता है कि फैमिली नहीं, फुटबाल की टीम

हो।

रसगुल्ला : हुजूर, इन बच्चों की एक फुटबाल टीम भी है।

जज : फुटबाल टीम! तुम मजाक कर रहे हो।

रसगुल्ला : मजाक नहीं है, हुजूर! एक बार शहर में मैच था। टिकट बिक चुके थे। पर मोहन बागान की टीम नहीं आई। मैंने चटपट अपने ग्यारह बच्चों को जर्सी पहनाकर उतार दिया।

पी. पी. : बाकी चार का भी हिसाब दे दो।

रसगुल्ला : सर, चार लड़कों को मैंने फील्ड के चारों ओर खड़ा कर दिया। मौका पड़ने पर वे रेफरी की धुलाई भी कर देते थे।

जज : माई गौड, व्हाट ए फैमिली!

पी. पी. : सर, मुजरिम ने किसी सवाल का माकूल जवाब नहीं दिया है। उसने सिर्फ किस्से सुनाकर अदालत का वक्त बर्वाद किया है।

जज : यू आर राइट! इसके बयान को खत्म समझा जाये। नाऊ चमचम देवी।

चमचम : जी हुजूर।

जज : मिसेज चमचम, तुम और तुम्हारे पति ने पंद्रह बच्चों को जन्म देकर सरकार के कानून को तोड़ा है। तुमको इस बारे में क्या कहना है ?

चमचम : हुजूर, सरकार के कनून के ऊपर भगवान् के कनून बा। जे सब होला, भगवान् के मर्जी से होला।

पी. पी. : नहीं, तुम लोग सरकार के कानून को नहीं तोड़ सकते। सरकारी कानून सब लोग जानते हैं। हरेक सड़क, हरेक गली, हरेक मकान पर लिखा है—हम दो, हमारे दो।

चमचम : सरकार, सहर पर त सिनेमा क छोकरियन के फोटू लगल बा। सरकार ऊ फोटू देखत हमके लाज लागता।

पी. पी. : मैं पूछता हूँ कि तुम्हारी किसी सहेली ने नहीं कहा—दू और दू।

चमचम : हाँ सरकार, सुनली ह—दू अउर दू।

जज : तब तुमने कानून क्यों तोड़ा ?

चमचम : सरकार सुनली ह कि परधानमंत्री के आठ बाचा बा अउर मुख्यमंत्री के नौ बाचा बा।

जज : व्हाट ए सिली, वुमन।

चमचम : अच्छा देखीं सरकार, दू अउर दू जोड़ि के चार भइल नू।

जज : तुम्हें जोड़ने को किसने कहा था ?

पी. पी. : जोड़ने पर भी चार हुए।

चमचम : हुजूर, जब चार हमार भइल, तब बचवा के बाबू के भी चार भइल नू!

जज : व्हाट नौनसेंस!

पी. पी. : सर, यह महिला भी बात बनाने में कम नहीं है।

जज : एनी वे, मिसेज चमचम, चार और चार आठ हुए। अब भी सात ज्यादा हैं।

चमचम : सरकार, राजा धितराष्ट्र के सौ गो लइका रहन। हम त एक सौ एक लइका के पलान बनवले बानी।

जज : शट अप! डोंट टाक नानसेंस!

चमचम : सरकार, हमार फौज कब ही पूरब लड़ेला, कबहूँ पच्छिम! हम त सरकार ओही खातिर इ सब लइका जनमले बानी।

पी. पी. : सर, यह महिला अदालत को गुमराह कर रही है।

जज : देखो, मिसेज चमचम, यह ठीक है कि हमारी फौज को दुश्मनों से लड़ना पड़ता है। इसका माने यह नहीं है कि घर-घर में एक-एक बैटेलियन खड़ी कर दी जाय।

चमचम : देखी सरकार, ई त बड़ी जियादती बा!

जज : इसमें क्या ज्यादती है ?

चमचम : सरकार, एगो सिपाही बहादुरी देखावेला त ओहके परम वीर चक्र मिलेला। हम फऊज में पंद्रह लइका देत बानी। हमके त पंद्रह चक्र मिले के चाही नू?

पी. पी. : सर, यह महिला बहुत चालाक है। बेकार की बातों से अदालत का समय नष्ट कर रही है।

जज : येस, यू आर राइट! मिसेज चमचम, तुमको कुछ और कहना है?

चमचम : सरकार, ई वकील साहब बहुत टर्र–टर्र कर तारन। हम एगो सवाल पूछे के चाहतानी!

जज : बोलो! स्पीक ऑन!

चमचम : हम पूछे के ई चाहतानी कि ई वकील साहब के कयको लइका बाड़न? एनके बाबू के कयको लइका रहन! एनके दादा के केतना बाचा रहलन?

जज : नहीं, ये सवाल नहीं पूछे जा सकते।

चमचम : सरकार, हम एतना जानतानी कि वकील साहब के पुरखा चित्रगुप्त जी के बारह गो लइका रहन।

जज : इन बातों का मुकदमे से कोई सम्बन्ध नहीं है। मुकदमा चित्रगुप्त जी पर नहीं, मुकदमा तुम पर और तुम्हारे पति पर है।

पी. पी. : सर, यह महिला अब दूसरों पर आक्षेप कर रही है। इसके बयान को बंद किया जाय।

जज : ठीक है। वेल डिफेंस लॉयर, आपको क्या कहना है?

सफाई के वकील : सर, हमारे मुवक्किलों की यह पहली गलती है। इन्हें माफ किया जाय।

पी. पी. : नो सर, ये खतरनाक मुजरिम हैं। इन्हें सख्त सजा दी जाय।

जज : येस, अब मैं अपना फैसला दे रहा हूँ। सब कुछ सुनकर और सबूतों पर विचार कर मैं रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी को दोषी करार करता हूँ। देश पर पंद्रह

बच्चों को लाद कर इन्होंने गंभीर अपराध किया है। सबसे खतरनाक बात यह है कि इन्होंने रिकार्ड तोड़ने के फेर में 101 बच्चों की योजना बनाई है। सबसे जरूरी है कि इस फैक्टरी के सालाना उत्पादन को रोका जाय। इसलिए मैं इन्हें तुरंत तलाक का दंड देता हूँ। इनके तलाक के बाद मेरा निर्णय है कि इनके पंद्रह बच्चों को पति और पत्नी के बीच बाँट दिया जाय।

पी. पी. : सर, इसको कहते हैं, फैसला। आपने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

जज : वेल मिस्टर रसगुल्ला सिंह और मिसेज चमचम देवी तुमको जबरन तलाक की सजा दी जा रही है। तुमको कुछ कहना है।

रसगुल्ला : हुजूर की जय हो! हुजूर देवता हैं।

जज : क्या मतलब!

रसगुल्ला : हुजूर, यह तलाक देकर आपने मुझे नई जिन्दगी दी है। मैं अपनी बीवी से तंग आ गया था। हर समय हुकुम लगाती थी।

चमचम : का हो, बचवा के बाबू!

रसगुल्ला : बस अब तुम्हारी हुकूमत खत्म! अब मैं एक आजाद परिन्दा हूँ।

चमचम : तब सरकार, ठीके बा। हमहूँ तलाक चाहत रहीं। हमरो मिजाज उबिया गइल रहे। हम जब नइहर जात रहलीं त इ बहुत खिसियात रहन।

रसगुल्ला : नहीं हुजूर, यह झूठ बोलती है। यह तो महीने में पंद्रह बार नैहर जाती थी।

चमचम : काहे ना जाइब। ओपर त कोई रोक नइखे कि दू आउर दू!

जज : स्टाप इट!

चमचम : सरकार जे कइलीं, से ठीक कइलीं। अब लइकन के

बाँट दिहल जाव!

जज : ठीक है। मेरा सुझाव है कि पंद्रह बच्चों में से आठ रसगुल्ला सिंह और सात चमचम देवी को दे दिए जाएँ।

चमचम : सरकार, ई त घोर अनियाव बा। आठ गो लइका हमरा के मिले के चाहीं।

जज : लेकिन, इसकी क्या वजह है?

चमचम : हुजूर, हम बचवा के बाबू से पूछे के चाहतानी कि ई पंद्रह गो लइका हम जनमले बानी कि ऊ?

रसगुल्ला : हुजूर, मैं भी बचवा की माई से पूछना चाहता हूँ कि इन पंद्रह बच्चों को मैंने पाला है या इसने?

चमचम : सरकार, माई-बाप हई! आठ गो लड़का हमरा मिले के चाहीं।

रसगुल्ला : हुजूर देवता हैं। आठ बच्चे मुझे मिलने चाहिए।

चमचम : देख ऽ बचवा के बाबू, रउआ जिद छोड़ दिहीं।

रसगुल्ला : देखो, बचवा की माई, अब मैं जोरू का गुलाम नहीं हूँ।

जज : व्हाट नानसेंस! यह सब क्या हो रहा है!

रसगुल्ला : देखिए हुजूर, मेरी माँग है, आठ बच्चे! अगर यह पूरी नहीं हुई तो फिर अनशन!

चमचम : सरकार, हमरा के आठ गो ना मिली त हमहूँ डबल अनशन कर देब!

जज : व्हाट ए प्रॉब्लम! देखो इसमें मुझे कुछ नहीं कहना है। तुम लोग आपस में तय कर लो।

रसगुल्ला : हुजूर, मेरी माँग है, कम-से-कम आठ।

चमचम : सरकार, आठ गो से कम में हमरो काम न चली।

जज : लुक, यह तुम्हारा घरेलू मामला है। बातचीत कर तय कर लो।

चमचम : ना सरकार, तलाक के बाद अब ई घर के मामला नइखे!

जज : देखिए पी. पी. साहब! यह सब क्या है! इन लोगों की

हेल्प कीजिए।

पी. पी. : देखो भाई तुम लोग सुलह कर अदालत की मदद करो।

चमचम : ना सरकार, एमे सुलह के कोनो गुंजाइश नइखे।

रसगुल्ला : हाँ, सर, मेरी बीवी ने कभी सुलह नहीं किया।

जज : अजब सिरदर्द है।

चमचम : देखी सरकार, एक बात हो सकेला!

जज : येस अपना सुझाव दो। गिव योर सजेशन!

चमचम : सरकार, तलाक के एक साल रोक दिहल जाव।

जज : क्या मतलब!

चमचम : सरकार, एक साल में एगो बच्चा अउर हो जाई। तब आठ-आठ के बराबर हिसाब हो जाई।

[हँसी की आवाज।]

जज : आर्डर! आर्डर! मिसेज चमचम लगता है कि तुम फिर कानून तोड़ना चाहती हो?

चमचम : सरकार, हम त रउआ खातिर ई उपाय बतइली ह!

जज : नो-नो, यह तो फिर कानून तोड़ने की तरकीब है।

सफाई का वकील : सर, सच कहा जाय तो रसगुल्ला सिंह और चमचम देवी का कोटा पूरा हो गया है। खतरा दूसरी तरफ से है।

जज : क्या मतलब! क्या रसगुल्ला सिंह फिर शादी करना चाहता है?

सफाई का वकील : सर, चमचम देवी एक महीने के अंदर अपने आठ बच्चों की शादी करने वाली है।

जज : माई गौड! कहीं ये बच्चे भी खानदानी हुए तो कानून का भुरता बन जाएगा।

सफाई का वकील : हाँ सर, यही बात है।

जज : तब आपका क्या सुझाव है?

रसगुल्ला : देखिए सर, मैं कहता हूँ कि परिवार नियोजन का नारा नई पीढ़ी को देना चाहिए।

चमचम : हाँ सरकार, बूढ़ सुग्गा अब का रामराम कही!

जज : आल राइट, मिस्टर रसगुल्ला सिंह और मिसेज चमचम देवी, तुम लोगों को इस शर्त पर रिहा किया जाता है कि तुम अपने पंद्रह बच्चों को परिवार नियोजन की सीख दोगे।

रसगुल्ला : ठीक है, सर! अपने सभी बच्चों को शादी के समय आठवीं शपथ भराऊँगा। वे कहेंगे—

रसगुल्ला-चमचम : न पाँच, न दस,
हम दो, हमारे दो,
बस! बस! बस!

[सब हँसते हैं।]

[पटाक्षेप]

एक लड़का, एक लड़की और एक झूठी खबर

पात्र

सतीश	:	एक बेकार नवयुवक
मनोरमा	:	सेठ गंगामल की सुपुत्री
सेठ गंगामल		
मुनीम जी		
संपादक जी		
सेठ पोहूमल		
सेठ दमड़ीमल		
अखबार विक्रेता		

1

[स्थान : एक पब्लिक पार्क। समय : संध्या 6 बजे। सतीश और मनोरमा का प्रवेश।]

सतीश : सुनो मन्नो, तुम मेरे आखिरी सवाल का जवाब दो। तुम मुझसे प्रेम करती हो या नहीं ?

मनोरमा : सतीश, यह तुम्हारा पहला सवाल भी था। मैं इसका जवाब दे चुकी हूँ।

सतीश : तब तुम्हें किस बात की हिचक है। एक बार निर्णय कर लो—हाँ या नहीं ?

मनोरमा : सतीश, तुम दर्शन के छात्र के रहे हो। ईश्वर है या नहीं, इसका तुरंत फैसला कर देते हो। मैं विज्ञान की छात्रा हूँ। बिना विश्लेषण के कोई निर्णय नहीं ले सकती।

सतीश : तुम करो चीर-फाड़, मेरी तो जान जा रही है। एक दिन जहर खाकर सोया रहूँगा।

मनोरमा : ओह, नो-नो, अभी आत्महत्या का समय नहीं आया है। और बाजार में जहर मिलना बहुत मुश्किल हो गया है।

सतीश : मजाक मत करो। तुम्हारी ये अदाएँ एक दिन मुझे पागल बना देंगी।

मनोरमा : सतीश, ईश्वर के लिए पागल मत बनना। सभी पागलखाने भरे हुए हैं। एडमिशन के लिए महीनों इंतजार करना पड़ सकता है।

सतीश : तुम अपनी आदत से बाज नहीं आओगी। आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ?

मनोरमा : अभी सब कुछ कहने का समय नहीं आया है। सभी बातों पर

विचार करना होगा।

सतीश : मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता। तुम साफ-साफ कहो। मुझसे विवाह करना चाहती हो या नहीं ?

मनोरमा : सतीश, तुम कभी-कभी बिलकुल बच्चा बन जाते हो।

सतीश : ठीक है, मुझे आज बच्चा ही मान लो और मेरी जिद पूरी कर दो।

मनोरमा : लेकिन विवाह तो बच्चों का खेल नहीं है। पूरी जिन्दगी का सवाल है।

सतीश : क्या सुखी जीवन के लिए प्रेम काफी नहीं है ?

मनोरमा : सतीश, प्रेम जीवन का ऑक्सीजन है पर अकेला ऑक्सीजन खतरनाक होता है।

सतीश : मन्नो, यह केमिस्ट्री की भाषा छोड़ दो। किसी महान् लेखक ने कहा है—प्रेम ही जीवन है : जीवन ही प्रेम है।

मनोरमा : हाँ, तुम्हारे लेखक ने ठीक कहा है। जीवन के लिए प्रेम पहली जरूरत है।

सतीश : और दूसरी जरूरत ?

मनोरमा : दूसरी जरूरत है, हमारे और तुम्हारे पिता की स्वीकृति।

सतीश : मेरे पिता को कोई एतराज नहीं है।

मनोरमा : लेकिन मेरे पिता को इस प्रस्ताव पर सख्त एतराज है। वे तुम्हारे आने-जाने को भी पसंद नहीं करते।

सतीश : आखिर मुझमें क्या कमी है ? अच्छा-खासा हीरो हूँ। फर्स्ट क्लास फिलासफी का एम. ए.। कॉलेज का स्पोर्टस्-चैम्पियन।

मनोरमा : सतीश, अपने आईने में सभी हीरो लगते हैं। सवाल यह है कि पिताजी के आईने में तुम्हारी सूरत कैसी लगती है!

सतीश : आखिर उन्हें मुझसे क्या शिकायत है ?

मनोरमा : पहली बात यह है कि तुम हमारी जाति के नहीं हो।

सतीश : यह भी कोई बात है। आजकल जात-पाँत को मानता कौन है!

मनोरमा : तुम रह गए फिलासफर के फिलासफर! आजकल तो जाति

का नारा पहले से भी ज्यादा चलता है। बेटी और वोट में तो बस जाति ही जाति है।

सतीश : लेकिन तुम्हारे पिता तो पूरी दुनिया घूम कर आए हैं।

मनोरमा : हाँ, यह ठीक है। देखो सतीश, एक बात और है।

सतीश : उसको भी कह डालो।

मनोरमा : सतीश, मेरे पिता कुछ कर्मठ किस्म के आदमी हैं। यह सारा बिजनेस उन्होंने ही जमाया है।

सतीश : यह तो बहुत अच्छी बात है।

मनोरमा : वह सोचते हैं कि लड़कों में कुछ 'डैश', कुछ ऐडवेंचर की स्पिरिट होना चाहिए।

सतीश : तुम कहना क्या चाहती हो ?

मनोरमा : देखो सतीश, बुरा मत मानना। मेरा मतलब यह है कि तुम तो फिलहाल अभी एम. बी. बी. एस. ही हो।

सतीश : क्या माने ? यह एम. बी. बी. एस. चीज है ?

मनोरमा : एम. बी. बी. एस. के माने हैं—मेम्बर आफ द बेकार—बैठे सोसायटी ! सतीश, पिताजी के लिए यह सबसे बड़ी अड़चन है।

सतीश : देखो मन्नो, मेरी मजबूरियों का मजाक मत उड़ाओ। क्या मैंने नौकरी के लिए कोशिश नहीं की। इसके लिए मैं कहाँ-कहाँ नहीं गया !

मनोरमा : जरूर गए होंगे। पर कहीं सफलता तो नहीं मिली।

सतीश : इसमें अपना बस नहीं है। मैं साठ फर्मों में अप्लाई कर चुका हूँ।

मनोरमा : हर जॉब के लिए कितने उम्मीदवार होंगे ?

सतीश : हरेक जॉब के लिए औसतन एक हजार उम्मीदवार होंगे।

मनोरमा : कुछ पैरवी की है ?

सतीश : नहीं, मैंने कोई पैरवी नहीं की है।

मनोरमा : तब गणित शास्त्र के अनुसार हरेक जॉब के लिए तुम्हारा चांस प्वाइंट जीरो-जीरो-वन परसेंट से अधिक नहीं है।

सतीश : इसमें मेरी क्या ग़लती है। यहाँ सबसे बड़ी फर्म तुम्हारे पिताजी की है। सेठ जमुनामल दूसरे नम्बर पर हैं। जमुनामल ने बहुत दौड़ाया। बाद में बोले कि हमें अच्छे कनेक्शन का कैंडिडेट चाहिए।

मनोरमा : देखो सतीश, लोग अच्छे कनेक्शन का आदमी चाहते हैं। अगर मेरे पिताजी भी अपने दामाद के बारे में ऐसा ही सोचें तो स्वाभाविक ही है।

सतीश : मन्नो, मुझे इस तरह जलील मत करो। जीवन में रुपया ही सब कुछ नहीं है।

मनोरमा : सतीश, हम थोड़ा व्यावहारिक बनें। अच्छा यह कहो कि तुम्हारा 'फ्यूचर प्लान' क्या है ?

सतीश : इंतजार करने के सिवा कर ही क्या सकता हूँ। साठ जगह अप्लाई किया है। कुछ-न-कुछ हो ही जाएगा।

मनोरमा : सतीश, तुम साठ जगह अप्लाई कर इंतजार कर सकते हो तो तुम एक और अर्जी यानि विवाह की अर्जी के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकते।

सतीश : नहीं, मैं इसके लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकता। जिन्दगी की लड़ाई के लिए मुझे तुम्हारा सहयोग चाहिए।

मनोरमा : वह सहयोग और शुभ कामना तुम्हारे साथ है। पर विवाह से तुम्हारे कंधों का बोझ बढ़ जाएगा।

सतीश : तुम मेरे लिए कभी बोझ नहीं बनोगी।

मनोरमा : सतीश, इस बात को छोड़ दो। हमें इन्तजार करना ही पड़ेगा।

सतीश : वह इंतजार, बहुत लम्बा इंतजार हो सकता है। तुम्हारे पिता को 'डैश' और 'एडवेंचर' पसंद है न! चलो मैं कुछ एडवेंचर ही दिखाऊँगा।

मनोरमा : क्या मतलब! कुछ पागलपन तो नहीं कर बैठोगे ?

सतीश : प्रेमी थोड़ा पागल होता ही है। उसके लिए कोई पागलपन बड़ा नहीं होता।

[दृश्य परिवर्तन]

2

[स्थान —सेठ गंगामल की बैठक। समय—सुबह आठ बजे।]

(पत्र विक्रेता की आवाज) नया संसार! नया संसार! देखिए करोड़पति की बेटी ने साधारण युवक से प्रेम विवाह! शहर की ताजा खबर! मिल मालिक की बेटी का अन्तरजातीय विवाह! नया संसार! नया संसार!

गंगामल : मुनीम जी!

मुनीम : जी सरकार।

गंगामल : देखिए मुनीम जी, यह क्या कह रहा है ?

मुनीम : सरकार, यह अपना ही अखबार वाला है। आ ही रहा है।

[पत्र विक्रेता का प्रवेश।]

पत्र विक्रेता : लीजिए सेठ जी, नया संसार!

[मुनीम जी अखबार ले लेते हैं।]

पत्र विक्रेता : **(बाहर जाकर)** नया संसार! करोड़पति की पुत्री का प्रेम विवाह! समाज सुधार की ओर बड़ा कदम!

गंगामल : मुनीम जी, जरा अखबार देखो! क्या बोल रहा है!

मुनीम : **(पढ़ता है)** करोड़पति की पुत्री का साधारण युवक से प्रेम विवाह! कल नगर के प्रमुख उद्योगपति सेठ··· !

गंगामल : क्या हुआ मुनीम जी, जरा जोर से पढ़ो न!

मुनीम : सरकार, गजब हो गया! यह तो जाल है। पूरा ब्लैकमेल है।

गंगामल : पूरा पढ़ो न मुनीम जी!

मुनीम : अच्छा हुजूर! कल नगर के प्रमुख उद्योगपति सेठ गंगामल की सुपुत्री कुमारी मनोरमा का विवाह सतीश कुमार के साथ संपन्न हुआ। सतीश कुमार एक शिक्षित पर बेकार युवक है। यह नगर का पहला अन्तरजातीय विवाह था। नगर के प्रमुख उद्योगपति और गणमान्य नागरिक इस अवसर

पर उपस्थित थे।

गंगामल : मुनीम जी!

मुनीम : हाँ सरकार।

गंगामल : मुनीम जी, यह तो पूरा फ्रॉड है।

मुनीम : हाँ सरकार, सरासर फ्रॉड है।

गंगामल : मुनीम जी, मन्नो को बुलाओ, यह सब उसकी कारस्तानी है। जाओ मेरी बंदूक ले आओ। आज इस लड़की को शूट कर दूँगा। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी!

मुनीम : सरकार, बंदूक तो लाता हूँ पर कारतूस नहीं है।

गंगामल : क्यों, कारतूस का क्या हुआ?

मुनीम : सरकार, कारतूस में जंग लग गया है।

गंगाराम : क्या कहते हो! यह कैसे हो सकता है!

मुनीम : सरकार, कारतूस तो आपके दादा के जमाने में खरीदी गई थी। रखे-रखे खराब हो गई।

गंगामल : तब जाओ छड़ी ले आओ। पिताजी कश्मीर से लाए थे।

मुनीम : सरकार, छड़ी तो टूट गई है। मरम्मत के लिए भेजी गई है। एक हफ्ते में बन कर आ जाएगी।

गंगामल : धत्तेरे की! अच्छा मन्नो को बुलाओ।

मुनीम : ठीक है, सरकार! (**बुलाता है**) मन्नो बिटिया!

[मनोरमा का प्रवेश।]

मनोरमा : आपने बुलाया है, पिताजी!

गंगामल : मन्नो, मैं पूछता हूँ, कि यह सब क्या है! तुझे इसी दिन के लिए पाला था? पढ़ाया-लिखाया था?

मनोरमा : क्यों, क्या हो गया?

गंगामल : हमें बेवकूफ समझती है! 'नया संसार में क्या छपा है'?

मनोरमा : देखती हूँ।

[मनोरमा अखबार लेकर पढ़ती है।]

मुनीम : सरकार, बहुत गुस्सा करने से आपका ब्लड-प्रेशर बढ़ जाएगा।

गंगामल : चुप रहो! (मनोरमा से) मैं पूछता हूँ कि यह सब क्या है ? तूने मेरी इज्जत धूल में मिला दी।

मनोरमा : मैं कुछ नहीं जानती। यह खबर बिलकुल झूठी है।

गंगामल : यह खबर अखबार में छपी है। यह झूठी कैसे हो सकती है!

मनोरमा : मैं कल शाम को घर पर थी। मुनीम चाचा जानते हैं।

मुनीम : हाँ सरकार, मन्नो बिटिया ठीक कहती है।

गंगामल : तब यह खबर कहाँ से आयी! जरूर सतीश का काम है।

मनोरमा : कल सतीश भी यहीं था।

मुनीम : हाँ सरकार, मन्नो बिटिया ठीक कहती है।

गंगामल : तुम सब मिले हुए हो। मैं पूछता हूँ कि यह सब किसका काम है!

मुनीम : सरकार, यह जरूर जमुनामल का काम है। वह आपकी उन्नति से बहुत जलते हैं। उन्होंने ही आपकी पगड़ी उछाली है।

गंगामल : सेठ जमुनामल! मैं उसे धूल में मिला दूँगा।

मनोरमा : पिताजी, आप अखबार के संपादक से पूछिए। यह खबर किसने भेजी है!

गंगामल : मुनीम जी!

मुनीम : हाँ, सरकार।

गंगामल : मुनीम जी, मन्नो ठीक कहती है। इसीलिए इसे इतना पढ़ाया था।

मुनीम : हाँ, सरकार!

[मुनीम जी फोन मिलाता है। मनोरमा का प्रस्थान।]

गंगामल : हलो!

उधर से : हलो!

गंगामल : मैं सेठ गंगामल बोल रहा हूँ! आप 'नया संसार' के संपादक हैं ?

उधर से : जी हाँ, मैं 'नया संसार' का संपादक हूँ। सेठ जी, लड़की

की शादी के लिए बधाई!

गंगामल : मैं तुम्हारे ऊपर मुकदमा दायर कर दूँगा!

उधर से : सेठ जी, ऐसी भी क्या नाराजगी है।

गंगामल : तुमने झूठी खबर छापी है।

उधर से : सेठ जी, हम कभी झूठी खबर नहीं छापते।

गंगामल : यह बिलकुल झूठी खबर है। मनोरमा की शादी किसी सतीश कुमार से नहीं हुई है।

उधर से : तब आपकी बेटी की शादी किससे हुई है। उसका नाम क्या है?

गंगामल : यह मैं नहीं जानता। इसका पता लगाना तुम्हारा काम है।

उधर से : तब सतीश कुमार की शादी किससे हुई है?

गंगामल : बको मत। मैं तुम्हारे ऊपर केस करूँगा।

उधर से : आप हमारी इंसल्ट कर रहे हैं। हम भी आपके ऊपर केस करेंगे।

गंगामल : मैं तुम्हारे ऊपर मानहानि का केस करूँगा।

उधर से : मैं आपके ऊपर डबल मानहानि का केस करूँगा।

[सेठ जी फोन रख देते हैं।]

गंगामल : मुनीम जी!

मुनीम : जी सरकार।

गंगामल : मुनीम जी, यह तो डबल केस की बात कर रहा है।

मुनीम : छोड़िए सरकार, इन लोगों को ज्यादा मुँह लगाना ठीक नहीं है।

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

गंगामल : हलो, गंगामल बोल रहा हूँ।

उधर से : हलो, मैं सेठ पोहूमल बोल रहा हूँ। लड़की की शादी में बुलाया नहीं। अभी 'नया संसार' में पढ़ा।

गंगामल : लेकिन…लेकिन…।

पोहूमल : कोई बात नहीं। बहुत अच्छा किया! बधाई देता हूँ।

[गंगामल फोन रख देते हैं।]

मुनीम : कौन था, सरकार ?

गंगामल : पोहूमल था। बधाई दे रहा था। अजब हाल है !

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

गंगामल : हलो, गंगामल बोल रहा हूँ।

उधर से : हलो, दमड़ीमल बोल रहा हूँ। 'नया संसार' पढ़ा। बहुत खुशी हुई।

गंगामल : मगर भाई दमड़ीमल··· ।

दमड़ीमल : तिलक नहीं दिया पर दहेज देने में कंजूसी मत करना। जात-पात छोड़ा, बहुत अच्छा किया।

[गंगामल टेलीफोन रख देते हैं।]

गंगामल : मुनीम जी !

मुनीम : जी सरकार।

[दृश्य परिवर्तन]

3

[स्थान : एक पब्लिक पार्क। समय : संध्या पाँच बजे।]

मनोरमा : तुमने तो सतीश, गजब कर दिया।

सतीश : देखो मन्नो, जनता स्लो बैटिंग से बिलकुल ऊब गई थी। मैंने एक छक्का मार दिया।

मनोरमा : लेकिन छक्का मारने के फेर में तुम्हारा विकेट ही उड़ गया।

सतीश : क्यों, क्या हुआ ?

मनोरमा : पिताजी, हमारे-तुम्हारे लिए डबल बैरल गन लेकर घूम रहे हैं। कहो कि कारतूस में जंग लग गई थी।

सतीश : मन्नो, तुम्हारे पिताजी के गुस्से में कब तक जंग लग जाएगी।

मनोरमा : यह संभव नहीं है। तुम्हारे एडवेंचर से बात उलझ गई।

सतीश : मेरे ख्याल में बात सुलझ गई है।

मनोरमा : क्या कहते हो।

सतीश : मन्नो, मैंने साठ फर्म में अप्लाई किया था। 'नया संसार' की खबर के बाद मुझे धड़ाधड़ ऑफर मिल रहे हैं। उनसठ ऑफर आ चुके हैं। हो सकता है कि साठवाँ रास्ते में हो।

मनोरमा : यह तो बहुत खुशी की बात है।

सतीश : ये ऑफर सतीश को नहीं मिले हैं, यह तय है।

मनोरमा : तब ये किसे मिले हैं ?

सतीश : ये गंगा इंडस्ट्रीज के मालिक सेठ गंगामल के दामाद को दिए गए हैं। लोग 'अच्छे कनेक्शन' को पहचान गए हैं।

मनोरमा : अच्छा, यह सब छोड़ो! कुछ चुनाव किया ? कहाँ ज्वाइन करोगे ?

सतीश : मुझे सेठ जमुनामल का जॉब पसंद है। पाँच हजार वेतन और इंकमटैक्स फ्री है।

मनोरमा : लेकिन पिताजी जमुनालाल को बिलकुल पसंद नहीं करते।

सतीश : तुम्हारे पिताजी की पसंद से मुझे क्या लेना-देना है!

मनोरमा : अजब आदमी हो! अगर पिताजी की बेटी से शादी करना चाहते हो तो पिताजी की पसंद का ख्याल करना ही होगा।

सतीश : तुम्हारे पिताजी ने मेरी पसंद का ख्याल कब किया है।

मनोरमा : सुनो मिस्टर, इतना ऐंठने से बात बिगड़ जाएगी। तुम्हीं कहते हो कि यह जॉब जमुनामल ने सेठ गंगामल के दामाद को दिया है।

सतीश : यह तो ठीक है।

मनोरमा : सुनो मिस्टर, तुम्हें अभी पिताजी के मोस्ट आबीडियेंट दामाद की ऐक्टिंग करनी होगी।

सतीश : यह मुझसे नहीं होगा।

मनोरमा : जरूर होगा। कोशिश करने पर सब कुछ किया जा सकता है।

[दृश्य परिवर्तन]

4

[स्थान : सेठ गंगामल की बैठक। समय : संध्या आठ बजे।]

मनोरमा : पिताजी!

गंगामल : क्या है, मन्नो।

मनोरमा : पिताजी मैंने पूरा पता लगा लिया है। सतीश ने एक कहानी लिखी थी। 'नया संसार' ने उसे सच मान कर उसे खबर कॉलम में छाप दिया।

गंगामल : बेटी, अब किस्सा तोता–मैना सुनने की मेरी उम्र नहीं है। मैं सब जानता हूँ।

मनोरमा : पिताजी, सतीश बहुत शरमिंदा है। वह आपसे माफी माँगने आया है।

गंगामल : नहीं–नहीं, मैं उसका मुँह भी नहीं देखना चाहता।

मनोरमा : लेकिन पिताजी, वह इस शहर से हमेशा के लिए जा रहा है। सिर्फ आपसे माफी माँगने आया है।

गंगामल : शहर से जा रहा है, अच्छा है। लेकिन कहाँ जा रहा है।

मनोरमा : सेठ जमुनामल ने उसे नियुक्ति दी है। वह उसे बाहर भेज रहे हैं।

गंगामल : सेठ जमुनामल! यह तू क्या कह रही है! जमुनामल बहुत बुरा आदमी है। उसने हजारों नवजवानों के कैरियर को बर्वाद कर दिया है।

मनोरमा : लेकिन पिताजी, कहीं–न–कहीं काम करना ही पड़ता है।

गंगामल : शट अप! जमुनामल का जॉब भी कोई जॉब है।

मनोरमा : हाँ, मैंने भी ऐसा ही सुना है।

गंगामल : अजीब लड़का है! लड़की माँगने चला आया। क्या मुझसे एक जॉब नहीं माँग सकता था?

मनोरमा : आपसे बहुत डरता है।

गंगामल : ठीक है, उसे बुला। देखना, मैं उसे कैसा झाड़ता हूँ!

[सतीश का प्रवेश ।]

सतीश : पिताजी, मुझे क्षमा कर दीजिए।

गंगामल : नहीं-नहीं, मैं तुझे माफ नहीं कर सकता।

मनोरमा : पिताजी, लड़कों से गलती हो जाती है।

गंगामल : तेरी इतनी हिम्मत! तूने जमुनामल का जॉब ज्वाइन किया! मैं तुम्हें शूट कर दूँगा।

सतीश : पिताजी, बहुत गलती हो गई।

गंगामल : सुनो, मेरी एक शर्त है। मैं जमुनामल के आदमी को अपना दामाद नहीं बना सकता। तुझे गंगा इंडस्ट्रीज ज्वाइन करना होगा।

मनोरमा : इस बात को मान लो, सतीश।

सतीश : ठीक है, मुझे मंजूर है। मैं आज ही जमुनामल को अपना इस्तीफा भेज देता हूँ।

गंगामल : तब ठीक है। तुम दोनों पैर छुओ।

[दोनों पैर छूते हैं।]

मनोरमा : पिताजी, आप कितने अच्छे हैं!

गंगामल : मुनीम जी!

मुनीम : जी, सरकार।

गंगामल : 'नया संसार' में एक विज्ञापन दे दो कि सेठ गंगामल अपनी लड़की के विवाह की खुशी में अपने साथी मित्रों को दावत के लिए आमंत्रित करते हैं।

मुनीम : अच्छा, सरकार।

[पटाक्षेप]

मुहब्बत—नई स्टाइल

(एक रेडियो प्रहसन)

पात्र

विनोद	:	एक फिल्म लेखक (आयु 28 वर्ष)
चाचा जी	:	एक अखबार के संपादक (आयु 40 वर्ष)
मिस ललिता	:	एक.फिल्म अभिनेत्री (आयु 22 वर्ष)
सम्पत	:	एक फिल्मी विलेन (आयु 26 वर्ष)

1

[स्थान : विनोद का ड्राइंग रूम। समय : संध्या सात बजे। कॉल बेल की आवाज।]

चाचा : अरे ओ विनोद! लेखक की दुम!

[विनोद दरवाजा खोलता है।]

विनोद : आओ चाचा! संपादक दी ग्रेट!

चाचा : मैं कहता हूँ विनोद कि तू लिखना छोड़ दे। यह तेरे बस का रोग नहीं है।

विनोद : क्या बात है चाचा! तुम्हारी नाक से दनादन गुस्से की मिसाइल छूट रही है।

चाचा : तेरी पिक्चर 'प्यार की शाम' देखने चला गया था।

विनोद : 'प्यार की शाम'। तुम्हें कैसी लगी?

चाचा : पूरे तीन घंटे का सिरदर्द है। मैं पूछता हूँ कि तू यह सब कूड़ा क्यों लिखता है?

विनोद : माई डीयर चाचा, 'प्यार की शाम' एक हिट फिल्म है। हर शहर में जुबली मना रही है।

चाचा : माई डीयर भतीजे, 'प्यार की शाम' एक 'फ्रॉड' है। तूने जनता को बेवकूफ बनाया है।

विनोद : क्या मतलब?

चाचा : मैं पूछता हूँ कि हीरो-हीरोइन के ये नखरे, आँसू में डूबे डायलॉग, पेड़ पर प्रेमगीत, हीरो-विलेन की फ्रीस्टाइल कुश्ती—असली जिन्दगी में कहाँ दिखाई पड़ती है?

विनोद : चाचा, तुमने कभी मुहब्बत की है?

चाचा : मुहब्बत! क्या मतलब?

विनोद : मतलब यह कि तुमने भी तो पुरानी स्टाइल से प्यार फर्माया होगा, चाची के साथ मुहब्बत के गुल खिलाये होंगे।

चाचा : नहीं भतीजे, एकदम नहीं! शादी के पहले मैंने तेरी चाची को देखा भी नहीं था।

विनोद : उसके बाद!

चाचा : शादी के समय मेरी गाँठ एक लाल कपड़े की गठरी के साथ बाँध दी गई।

विनोद : फिर उसके बाद, चाचा!

चाचा : शादी के बाद बीवी रसोई घर में घुस गई। एक दिन प्यार का डायलॉग रटकर बीवी को सुनाने गया। वहाँ भतीजे, तेल और मिर्च की ऐसी झाग लगी कि मैं छींकते-छींकते परेशान हो गया।

[दोनों हँसते हैं।]

विनोद : वेरी सॉरी चाचा! अब मैं समझा कि तुम मुहब्बत का नाम सुनते ही क्यों छींकने लगते हो!

चाचा : शट अप! मैं फिर कहता हूँ कि तुम्हारी यह मुहब्बत-उहब्बत सब नकली माल है।

विनोद : तुम नहीं जानते चाचा!

चाचा : मैं सब जानता हूँ। मैं रोज घूमने जाता हूँ। मैंने किसी बगीचे में तुम्हारे हीरो-हीरोइन नहीं देखे।

विनोद : चाचा, हम नई स्टाइल की मुहब्बत गढ़ रहे हैं। नई पीढ़ी तेजी से सीख रही है। देखना कुछ दिनों के बाद बागीचों में भीड़ लग जाएगी।

चाचा : मुझे ब्लफ मत करो। लाओ, नई मुहब्बत का एक भी सच्चा उदाहरण दिखाओ।

विनोद : चाचा, तुम्हारी नाक के नीचे ही एक सच्ची मुहब्बत पनप रही है।

चाचा : क्या मतलब! जरा साफ-साफ कहो भतीजे!

विनोद : चाचा, तुम मिस ललिता को जानते हो?

चाचा : मिस ललिता! अरे वही 'प्यार की शाम' की हीरोइन! बड़ा नकिया कर बोलती है।

विनोद : ओह नो-नो, चाचा; तुमने उसे ठीक से नहीं सुना। मिस ललिता बोलती है तो लगता है कि न जाने कितने सितार, सरोद, शहनाई…सब साथ-साथ…

चाचा : बेसुरे बज रहे हो।

विनोद : ओह नो-नो! देखो चाचा, जान-बूझकर विलेन का डायलॉग मत बोलो।

चाचा : ओ, तुझे हीरो का डायलॉग पसन्द है। कहीं खुद हीरो तो नहीं बन गया है ?

विनोद : बहुत बुरी तरह बन गया हूँ, चाचा। मैं और ललिता, ललिता और मैं—हम दोनों को कुछ हो गया है।

चाचा : मैं समझ गया। इसको कहते हैं एल-ओ-वी-ई, लव यानि मुहब्बत।

विनोद : बहुत हॉट लव, चाचा। लोग लैला-मजनू की चर्चा करते हैं। अब तुम्हें ललिता-विनोद के लव पर कविता छापनी पड़ेगी।

चाचा : लेकिन प्यारे, ललिता बहुत मार्डन लड़की है! बहुत नाज-नखरों वाली है।

विनोद : हमारा प्यार बहुत मार्डन है चाचा। मैं उसके हर नखरे को उठाने को तैयार हूँ।

चाचा : लेकिन भतीजे, ललिता की जूती की एड़ी बहुत ऊँची है।

विनोद : ऊँची ऐड़ी की जूतियाँ बहुत अच्छी होती हैं, चाचा। जरूरत पड़ने पर लड़कियाँ उनसे अपनी हिफाजत करती हैं।

चाचा : सोच ले बेटा, कैद में जाने से पहले सोच ले।

विनोद : अब तो कैद हो गई, चाचा। पूरी की पूरी जन्म-कैद।

चाचा : लेकिन प्यारे…

विनोद : खुद ही देख लो चाचा। स्टूडियो में हमने अपनी मुहब्बत पर एक लघु फिल्म बनाई है।

चाचा : मुहब्बत की फिल्म!

विनोद : हाँ चाचा, देखो प्रोजेक्टर ऑन करता हूँ।

[विनोद प्रोजेक्टर ऑन करता है।]

विनोद : तुम आ गईं ललिता डीयर!

ललिता : (नाक के सुर में) हाँ डीयर, मैं आ गई। कॉलेज को ऐसा छोड़ा जैसे लोग इंटरवल के बाद तुम्हारी पिक्चर छोड़ देते हैं।

विनोद : मेरी पिक्चर गर्म चाय की तरह होती है। लोग उसे कई घूँट में खत्म करते हैं।

ललिता : हाँ डीयर, मैं तुम्हें गरम चाय की तरह प्यार करती हूँ।

विनोद : एक सवाल पूछूँ, डार्लिंग ?

ललिता : सवाल! मत पूछो डीयर! मैं हिसाब में बहुत कमजोर थी। परीक्षा में हमेशा गर्म रसगुल्ला मिलता था।

विनोद : कोई बात नहीं डीयर! जो कॉलेज में फेल होता है वह मुहब्बत में अव्वल आता है।

ललिता : ओ थैंक यू, डीयर! मैं तुम्हें गर्म रसगुल्ले-सा प्यार करती हूँ।

विनोद : तुम जानती हो डीयर कि ताज किसने बनवाया है ?

ललिता : बहुत अच्छा बनवाया है। देखो डीयर, मैं हिस्ट्री में बहुत कमजोर थी।

विनोद : वेरी गुड! हिसाब में कमजोर, हिस्ट्री में कमजोर···

ललिता : लेकिन मुहब्बत में बहुत मजबूत।

[दोनों हँसते हैं।]

ललिता : देखो डीयर, मेरे लिए भी एक ताज बनवा दो न!

विनोद : हाँ मेरी प्यारी बुलबुल, मैं तेरे लिए एक ताज बनवाऊँगा जिसमें तुम हमेशा चहकती रहना।

ललिता : ओ थैंक यू डीयर, मैं भी तुम्हारे लिए एक स्टेनलेस स्टील की जंजीर खरीदूँगी। इसमें बँधकर तुम एक अल्सेशियन-सा प्यार से भूकते रहना!

चाचा : बंद करो! मैं कहता हूँ कि यह बेवकूफी बंद करो!

[विनोद प्रोजेक्टर बंद करता है।]

विनोद : क्या हुआ चाचा! ऐसी क्या बात हो गई ?

चाचा : तुम्हारे मुहब्बत के डायलॉग सुनकर मेरे सिर में फिर दर्द शुरू हो गया।

विनोद : तुम फिर विलेन-सी बात करने लगे। देखो चाचा, एक काम करो!

चाचा : बोलो।

विनोद : चाचा, हमारे बारे में अखबार में एक कॉलम लिख दो—गर्मागर्म-सनसनीखेज!

चाचा : देखो शादी के समय तुम्हारे बारे में लिखूँगा! कई फोटो छापूँगा।

विनोद : नो-नो, शादी के पहले एक हॉट स्कैंडल जरूरी है—मैं और ललिता, ललिता और मैं।

चाचा : लेकिन प्यारे, इससे तो बदनामी होगी।

विनोद : हमें एक प्यारी बदनामी की सख्त जरूरत है। इससे हमारा बिजनेस खूब चमकेगा।

चाचा : लेकिन भतीजे, तेरी कहानी में कोई दम नहीं है। सिर्फ हीरो-हीरोइन काफी नहीं होते। सनसनी के लिए एक तीसरा पात्र चाहिए।

विनोद : ओ येस, तुम ठीक कहते हो, चाचा। बिना विलेन के कहानी में मजा नहीं आएगा।

चाचा : तुम किस चक्कर में पड़ गए। ललिता से शादी करो और घर बसाओ।

विनोद : नो चाचा, शादी से पहले मुहब्बत जरूरी है। मुहब्बत के लिए एक विलेन जरूरी है। मैं एक विलेन का बंदोबस्त करता हूँ—फटाफट!

चाचा : देखो राजा, तुम मुफ्त में सिरदर्द खरीद रहे हो।

विनोद : नो-नो, विलेन मिलना मुश्किल नहीं है। सम्पत मेरा गहरा दोस्त है।

चाचा : कौन सम्पत! फिल्मी दुनिया का मशहूर विलेन। वह तो बहुत बुरा आदमी है।

विनोद : नहीं सम्पत, बिलकुल बुरा आदमी नहीं है। सम्पत को मैं गढ़ता हूँ। मैं जो लिखता हूँ, सम्पत वही बोलता है।

चाचा : लेकिन बेटे, उसकी इमेज ठीक नहीं है। भले घर की लड़कियाँ उससे बहुत नफरत करती हैं।

विनोद : तब तो और भी अच्छा है, चाचा। उसकी काली इमेज के सामने मेरी उजली इमेज खूब चमकेगी।

चाचा : लेकिन प्यारे!

विनोद : नहीं चाचा, अब सब तय हो गया। सुबह ललिता मेरे साथ''शाम को सम्पत के साथ—कॉलम पर कॉलम लिखो चाचा! तुम्हारा अखबार खूब बिकेगा।

चाचा : अच्छा भतीजे, जैसे तेरी मर्जी।

[संगीत वादन।]

2

[स्थान : ललिता का फ्लैट। समय : संध्या सात बजे।]

विनोद : हलो ललिता डीयर!

ललिता : ओ विनोद! माई लव! मैं कब से तुम्हारे इंतजार में बैठी हूँ। सात बजे पार्टी है।

विनोद : नहीं आज की पार्टी कैंसिल! आज हमें कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

ललिता : जरूरी बात! हमारे मैरेज की डेट!

विनोद : अभी शादी नहीं, दो महीने नहीं! देखो डीयर तुम्हें सम्पत के साथ ट्रिप पर जाना होगा।

ललिता : क्यों, किसी फिल्म की शूटिंग है?

विनोद : नहीं डीयर, हमें एक ड्रामे की जरूरत है। हम चाहते हैं कि अखबारों में हमारे बारे में गर्मागर्म चर्चा हो।

ललिता : ओ मैं समझ गई, यू नॉटी ब्वॉय! लेकिन डीयर, सम्पत बहुत बुरा आदमी है।

विनोद : नो-नो, सम्पत एक शरीफ आदमी है।

ललिता : ओ नो, वह बिलकुल शरीफ नहीं है। पिछली फिल्म में ऐक्टिंग के बहाने उसने मुझे दबोच लिया। उसकी नीयत ठीक नहीं थी।

विनोद : नहीं डीयर, उसमें सम्पत का कुसूर नहीं था। प्रोड्यूसर एक रेप सीन चाहता था। कहानी मैंने ही लिखी थी।

ललिता : यू नॉटी ब्वॉय! तुम बहुत नॉटी कहानियाँ लिखते हो।

विनोद : हमारी मुहब्बत की कहानी भी ऐसी ही नॉटी होगी।

ललिता : लेकिन डीयर!

विनोद : डरने की कोई जरूरत नहीं है, डार्लिंग! मैं सम्पत से बात कर लेता हूँ।

ललिता : लेकिन हमारी शादी!

विनोद : तुम्हारे लौटने के दिन! चट मँगनी, पट ब्याह!

ललिता : थैंक यू डीयर! मैं उस तारीख का बेहद इंतजार कर रही हूँ।

[संगीत वादन।]

3

[स्थान : सम्पत का फ्लैट। समय : सुबह आठ बजे।]

विनोद : हलो सम्पत!

सम्पत : आओ बादशाहो! किधर भूल पड़े।

विनोद : एक छोटा-सा काम है।

सम्पत : कोई बड़ा काम कहो, डीयर! तुम्हारे लिए जान हाजिर है।

विनोद : सम्पत, मिस ललिता दो महीने के लिए हिल स्टेशन जाना चाहती है।

सम्पत : माइ गॉड! तब तो यह शहर ही उजड़ जाएगा।

विनोद : शट अप! देखो तुम्हें उसका साथ देना होगा।

सम्पत : अजी वाह लेखक महोदय! मुहब्बत तुम करो और हिल स्टेशन मैं घुमाऊँ।

विनोद : देखो डीयर, अभी मुहब्बत-उहब्बत का मामला नहीं है।

सम्पत : व्हाट! लोग कहते हैं कि तुम्हारी मँगनी हो गई है।

विनोद : नहीं माई डीयर! न मुहब्बत, न मँगनी—बस कुछ यूँयूँ है।

सम्पत : यूँयूँ!

विनोद : हाँ, बस यूँयूँ!

[दोनों हँसते हैं।]

सम्पत : देखो डीयर, मैं बहुत बिजी हूँ। दो शिफ्ट शूटिंग और एक दर्जन लड़कियों की डेट्स!

विनोद : एक दर्जन लड़कियाँ?

सम्पत : येस, सोमवार को रमला, मंगल को अमला, बुद्ध को कमला, वृहस्पत को विमला…

विनोद : बस-बस! तब तो तुम्हें छुट्टी की और भी जरूरत है।

सम्पत : लेकिन बादशाहो, तुम्हारी बात कुछ समझ में नहीं आई।

विनोद : देखो सम्पत, ललिता एक स्कैंडल चाहती है। तुम भी चर्चित हो जाओगे।

सम्पत : ओ आई सी, लेकिन मैं तो एक बेहद शरीफ आदमी हूँ।

विनोद : वह मैं जानता हूँ। सिर्फ ललिता को थोड़ा समझाने की जरूरत है।

सम्पत : वह मैं कर लूँगा, प्यारे!

विनोद : अच्छा तो यह प्रोग्राम तय रहा न?

सम्पत : ओ के, डीयर, मिस ललिता के लिए जान हाजिर है।

विनोद : फिर वही विलेन वाला डायलॉग।

सम्पत : हम तो तुम्हारा ही डायलॉग बोलते हैं, डीयर।

विनोद : अच्छा चीयर यू, बैड ब्वाय!

सम्पत : नो-नो, गुड ब्वाय! वेरी गुड ब्वाय!

[संगीत वादन।]

4

[स्थान : जूहू बीच। समय : दिन के एक बजे।]

चाचा : क्यों भतीजे अब कितनी देर और बैठना होगा?

विनोद : अब वे आते ही होंगे। वे हिल स्टेशन से आ गए हैं।

चाचा : यहाँ क्या प्रोग्राम है?

विनोद : इस नाटक का अंतिम सीन यहीं होगा।

चाचा : क्या मतलब ?

विनोद : यहाँ हीरोइन विलेन के साथ कार पर आएगी। हीरो नाराज होगा। हीरोइन हीरो को मनाने की कोशिश करेगी। इस पर हीरो एक भाषण देगा। बस हीरोइन विलेन को छोड़ देगी।

चाचा : उसके बाद!

विनोद : सीधे कचहरी! शादी का रजिस्ट्रेशन!

चाचा : इस सीन में विलेन क्या करेगा ? कुछ बॉक्सिग-वॉक्सिग ?

विनोद : नहीं-नहीं, बॉक्सिग नहीं! चाचा मेरे खानदान में भी किसी ने बॉक्सिग नहीं की है।

चाचा : बेटे तेरे खानदान में किसी ने ऐसा रोमांस भी न किया होगा।

[मोटर रुकने की आवाज।]

विनोद : देखो चाचा, वे लोग आ गए। हलो सम्पत! हलो ललिता!

सम्पत : हलो विनोद!

ललिता : हलो विनोद!

विनोद : तुम लोग देर से आए। करीब दो घंटे लेट।

ललिता : हाँ विनोद, हम कुछ जरूरी काम में फँस गए थे।

चाचा : देखा प्यारे, हीरोइन दो महीने के बाद लौटी है पर हीरो के पास दो घंटे लेट आती है। चल बेटा, शुरू कर दे अपना डायलॉग!

ललिता : नो विनोद! अब डायलॉग की जरूरत नहीं है। हमारे सभी डायलॉग उलट-पुलट गए हैं।

विनोद : डायलॉग उलट-पुलट गए हैं! क्या मतलब!

ललिता : सिर्फ डायलॉग ही नहीं, कहानी और पात्र भी बदल गए हैं।

विनोद : मैं कुछ नहीं समझा।

ललिता : हमें बधाई दो विनोद। हम दोनों ने विवाह कर लिया है। हम यहाँ सीधे कचहरी से आ रहे हैं।

विनोद : विवाह कर लिया! कचहरी से आ रहे हैं। माइ गॉड!

ललिता : हाँ विनोद, इसका सारा श्रेय तुमको ही है।

विनोद : मैं समझ गया। यह सब सम्पत की ही कारस्तानी है। अंत में यह

सच्चा विलेन निकला।

सम्पत : नहीं बादशाहो, मैं तो विलेन का एक भी डायलॉग नहीं बोला।

ललिता : हाँ, सम्पत ठीक कहता है।

विनोद : लेकिन मिस ललिता, तुम तो सम्पत से बहुत नफरत करती थीं।

ललिता : हाँ, जब वह विलेन का रोल करता था तब मैं उससे सचमुच नफरत करती थी।

विनोद : फिर क्या हुआ ?

ललिता : हिल स्टेशन पहुँचते ही वह हीरो का डायलॉग बोलने लगा। ये डायलॉग सुनकर मुझे उस पर प्यार आ गया।

विनोद : तुम सचमुच एक बेवकूफ लड़की हो।

ललिता : नो विनोद, ये सब तुम्हारे लिखे हुए डायलॉग थे। उसने इतनी खूबसूरती से अदा किया कि मुझे लव हो गया।

सम्पत : तुम बहुत अच्छा डायलॉग लिखते हो विनोद! यू आर ए ग्रेट राइटर!

विनोद : शट अप यू रैस्कल! चाचा!

चाचा : हाँ प्यारे!

विनोद : चाचा, कुछ बॉक्सिग जरूरी हो गई है। असली बॉक्सिग!

चाचा : पर बेटे, बॉक्सिग तो तेरे खानदान में भी किसी ने नहीं की है।

विनोद : नहीं चाचा, इस विलेन के बच्चे को सबक सिखाना होगा।

चाचा : भतीजे, कहीं दो हाथ लग गए तो अस्पताल जाना होगा। सुनता हूँ कि अस्पताल में बड़ी पतली खिचड़ी मिलती है।

विनोद : लेकिन चाचा, यहाँ सब कुछ बदल गया। हीरो मुँह ताकता रह गया और विलेन हीरोइन ले जा रहा है।

चाचा : बेटे, यह आर्ट फिल्म है। इसमें विलेन हीरो से ज्यादा पापुलर होता है।

विनोद : जाते-जाते अपना डायलॉग सुना दूँ, चाचा! बड़ी मेहनत से लिखा था।

चाचा : नहीं भतीजे, यह खेल खत्म हो गया। बोल बेटा, जान बची लाखों पाए, घर के बुद्धू घर को आये।

[पटाक्षेप]

लैला और मजनू के बीच एक टेलीफोन

पात्र

कामिनी	:	एक स्टेनो (उम्र 22 वर्ष)
दामिनी	:	कामिनी की सहेली (उम्र 24 वर्ष)
कमल कृष्ण	:	कामिनी का सहकर्मी (उम्र 26 वर्ष)

1

[स्थान : कामिनी का ड्राइंगरूम। समय : संध्या 6 बजे। टेलीफोन की घंटी बजती है।]

उधर से आवाज : हैलो, दामिनी स्पीकिंग!

कामिनी : अरे दम्मो, मैं कामिनी बोल रही हूँ।

दामिनी : अरे कम्मो, क्यूँ रे तू अभी तक ऑफिस में क्या कर रही है?

कामिनी : ऑफिस में क्यों बैठूँगी! जानती है ऑफिस में पाँच बजे के बाद मैं एक मिनट नहीं ठहरती। जहाँ पाँच बजे कि मैं बस फुर्र!

दामिनी : अच्छा मेरी गौरैया इस समय तू कहाँ से कुहक रही है?

कामिनी : डीयर दम्मो, मैं अपने ही घर से टेलीफोन के तारों पर आलाप कर रही हूँ।

दामिनी : अपने ही घर से—व्हाट डू यू मीन?

कामिनी : दम्मो मैंने टेलीफोन लगवा लिया है। आज ही लाइन मिली है—सिक्स-टू-जीरो।

दामिनी : तू सचमुच पागल है।

कामिनी : कम्मो, अच्छे काम के लिए कुछ पागलपन जरूरी है। बोनस के पैसे मिले थे। बस टेलीफोन लगवा लिया।

दामिनी : क्यूँ रे, तू टेलीफोन लगवा के क्या करेगी?

कामिनी : तुझसे बात करूँगी—कम-से-कम एक घंटा रोज़!

दामिनी : माई गौड! तू रोज़ घंटा-भर बोर करेगी।

कामिनी : शट अप! मैं तुझे बोर कर रही हूँ?

दामिनी : नहीं-नहीं, तू तो जयजयवंती की तान ले रही है।

कामिनी : सुन दम्मो, प्राचीन काल में ऋषि-मुनि जब जिससे चाहते थे बातचीत कर लेते थे। आज वही काम टेलीफोन कर रहा है।

दामिनी : क्यूँ रे, तू कब—किससे—क्या बात करना चाहती है?

कामिनी : कभी-कभी ट्रेन-टाइम पता करना पड़ता है। अब बैठे-बैठे सब सूचनाएँ मिल जाएँगी।

दामिनी : चल एक बात हुई।

कामिनी : किराना मारकेट में होम सर्विस है। फोन उठाओ और सारा राशन घर पर हाजिर।

दामिनी : बोलती जा, मैं गिन रही हूँ।

कामिनी : महीने में कम-से-कम एक बार कुकिंग गैस के लिए फोन करना होगा।

दामिनी : येस गो ऑन!

कामिनी : सिनेमा हॉल में रिजर्वेशन बहुत आसान हो जाता है। अभी तो धुक-पुक लगी रहती है कि पता नहीं टिकट मिलेगा या नहीं।

दामिनी : बस इन्हीं छोटे-छोटे कामों के लिए तूने हजार रुपया फूँक दिया।

कामिनी : (जोर से) देख दम्मो, जरूरत को ऐसे मत गिन। आज की जिन्दगी में टेलीफोन जरूरी है। आधुनिकता की पहली पहचान है।

दामिनी : माई गौड, कितना जोर से चीख रही है। कम्मो, अगर तू इतना जोर से चीख सकती है तो तुझे टेलीफोन की जरूरत ही नहीं है।

कामिनी : देख दम्मो, अभी नई चीज है। पड़ोस को सुनाने के लिए चीखना जरूरी है। बाद में 'सौफ्ट टोन' में बात करूँगी।

दामिनी : अच्छा तो तूने 'सौफ्ट टोन' में बात करने के लिए टेलीफोन लिया है। जो कुछ आमने-सामने नहीं कहा जा सकता उसे टेलीफोन पर कहेगी।

कामिनी : तू चुप रहेगी या मार खायेगी।

दामिनी : आखिर वह भाग्यवान कौन है जिससे तू टेलीफोन पर 'सौफ्ट टोन' में बात करेगी।

कामिनी : देख दम्मो, कल टेलीफोन डायरेक्टरी देखकर लिस्ट तैयार करूँगी कि टेलीफोन पर किससे-किससे बातचीत की जा सकती है। मैंने तो तय कर लिया है कि शादी फोन वाले के साथ ही करूँगी।

दामिनी : गुड, यह हुई एक आधुनिक लड़की की पसंद। अरे हाँ, तुझे मालूम है न कि कमल के पास भी टेलीफोन है।

कामिनी : कौन कमल ?

दामिनी : तुझे कमल का परिचय देना होगा। तेरे ही ऑफिस में टेक्निकल एडवाइजर है।

कामिनी : अच्छा तू कमल कृष्ण की बात कर रही है। देख दम्मो, उस इडीयट की बात मत कर।

दामिनी : मैं तो सिर्फ यह कह रही थी कि उसके पास भी टेलीफोन है। उसका फोन नम्बर है—फोर-टू-जीरो।

कामिनी : गुड, मिजाज के मुताबिक ही नम्बर मिला है।

दामिनी : तेरा नम्बर है सिक्स-टू-जीरो। कुल दो सौ का फर्क है।

कामिनी : देख दम्मो, उसको पता न लगे कि मैंने फोन लगवाया है। झूठ मूठ रिंग करेगा।

दामिनी : तू तो सचमुच पगली है। अगली डायरेक्टरी में तेरा नाम छपेगा। यह बात भला छिप सकती है।

कामिनी : माई गौड! खैर कुछ भी हो, मैं न उसे फोन करूँगी, न उसका फोन रिसीव करूँगी।

दामिनी : क्यूँ रे, तू कमल से इतना नाराज क्यों है। यंग है, स्मार्ट है, अच्छी पोस्ट पर है।

कामिनी : ईडियट अपने को हीरो समझता है। मैंने एक दिन उसकी हेकड़ी भुला दी थी।

दामिनी : सुनती हूँ कि उसने एक दिन तुझे स्कूटर पर लिफ्ट देने की

बात कही। तू इसी पर बुरी तरह उखड़ गई।

कामिनी : ठीक किया। ईडियट ऑफिस की लड़कियों को बराबर टीज करता रहता है।

दामिनी : अच्छा डीयर, तुझे तेरा टेलीफोन मुबारक। लेकिन बुलबुल जरा बच कर रहना। क्या कहा है शायर ने—

ये इश्क नहीं आसां, इतना ही समझ लीजो,
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

[संगीत वादन।]

2

[स्थान : वही। समय : दो दिन बाद। टेलीफोन की घंटी बजती है।]

उधर से आवाज : हलो!

कामिनी : रेलवे एनक्वायरी! सिक्स्टी अप की क्या पोजीशन है?

उधर से : आप कौन बोल रही हैं?

कामिनी : मैं सिक्स टू जीरो से कामिनी बोल रही हूँ।

उधर से : मिस कामिनी! वेरी गुड! नये टेलीफोन के लिए बधाई!

कामिनी : जी, आप कौन बोल रहे हैं?

उधर से : मिस कामिनी, मैं फोर टू जीरो से कमल कृष्ण बोल रहा हूँ।

कामिनी : सौरी, रांग नंबर, मैंने तो फाइव-टू-जीरो को फोन किया था।

कमल : इससे क्या फर्क पड़ता है। सिक्स्टी डाउन के बारे में मैं ही पता कर लेता हूँ।

कामिनी : नो थैंक यू! मैं स्टेशन एनक्वायरी से खुद बात कर लूँगी।

कमल : देखिए मिस कामिनी, लगता है कि मेरी और आपकी लाइन

'टैंग्ड' यानि कि कहीं उलझ गई है।

कामिनी : माई गौड! फोन के नाम पर मैंने बुआ जी को रोक रखा है। कहीं सिक्स्टी डाउन चली गई तो गजब हो जाएगा।

कमल : मैं पीयून भेज रहा हूँ। तुरंत खबर आ जाएगी।

कामिनी : मैं पूछती हूँ कि हर काम के लिए पीयून ही भेजना पड़े तो फोन से क्या फायदा है ?

कमल : जरूर फायदा है। अगर फोन न होता तो आपकी मधुर आवाज कैसे सुनने को मिलती। सच कहूँ मिस कामिनी, आप बहुत मीठा बोलती हैं। लगता है कि दूर अमराइयों में कोयल कुहक रही हो।

कामिनी : आई से शट अप! देखिए कमल जी, इन डायलॉगों से कुछ नहीं होगा। मैं फोन रख रही हूँ।

कमल : अरे, यह आप क्या कर रही हैं। कहीं सिक्स्टी डाउन चली गई तो बुआ जी नाराज हो जाएँगी।

कामिनी : ओ माई गौड! बुआ जी हर दो मिनट पर पूछ रही हैं। बेमतलब का झंझट हो गया।

कमल : पियून साइकिल पर स्टेशन गया है। दस-पंद्रह मिनट में आ जाएगा।

कामिनी : कहीं इसी बीच ट्रेन चली गई तो ?

कमल : यह संभव नहीं है। अभी तो सिक्स्टी डाउन का टाइम ही नहीं हुआ है।

कामिनी : चलिए ठीक है। मैं तो पूरा बोर हो गई।

कमल : बुरा मत मानियेगा, मिस कामिनी। सुनता हूँ कि आप बहुत नाराज हैं। क्या कहूँ, अपनी ही किस्मत खराब है। क्या कहा है शायर ने—
हम हैं मुश्ताक, और वोह बेजार,
या इलाही, यह माजरा क्या है!

कामिनी : देखिए मि. कमल, इस शेरो शायरी से कुछ नहीं होगा। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है—यहाँ न लागे राउर माया!

कमल : मिस कामिनी, हर जुर्म की सजा होती है। हर सजा की अपील होती है।

कामिनी : आप कान खोल कर सुन लीजिये। कोई शरीफ लड़की आपसे बात करना पसंद नहीं करती। सबकी शिकायत है कि आप लड़कियों को देखकर खाँसने लगते हैं।

कमल : क्या कहूँ मिस कामिनी, मुझे क्रौनिक कफ है। बहुत इलाज किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

कामिनी : हुँह, यह सब बहानेबाजी है।

कमल : देखिए मिस कामिनी, मैं नरवस टेम्परामेंट का आदमी हूँ। लड़कियों को देखकर बेहद नरवस हो जाता हूँ।

कामिनी : सुनिए मिस्टर ये मजनू वाली अदा छोड़ दीजिए। आप सबको बेवकूफ नहीं बना सकते।

कमल : क्या कहूँ देवी जी, सब अपनी ही बदकिस्मती है।
या रब न वह समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात,
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको जबां और।

कामिनी : बहुत सुन चुकी आपकी शायरी। मैं पूछती हूँ कि सिक्स्टी डाउन का क्या हुआ ?

कमल : ओ येस, पीयून लौट कर आ गया है। सिक्स्टी डाउन दो घंटे लेट है।

कामिनी : थैंक गौड, अब बुआ जी आराम से जाएँगी।

[संगीत वादन।]

3

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

कामिनी : हलो!

उधर से आवाज : हलो, आप किसको चाहती हैं ?

कामिनी : मैं किराना स्टोर्स के मिस्टर केसरी को चाहती हूँ।

कमल : (आवाज बदल कर) मैं किराना स्टोर्स से केसरी बोल रहा हूँ।

कामिनी : मि. केसरी, आपकी आवाज काफी बदली हुई लगती है।

कमल : हाँ मेम साहब, अभी-अभी गले में मिर्च की झाग लग गई है। कहिए, क्या हुक्म है ?

कामिनी : केसरी जी, मिर्च की क्या कीमत है ?

कमल : चार रुपये किलो।

कामिनी : और काली मिर्च।

कमल : चार रुपये किलो।

कामिनी : यह आप क्या कह रहे हैं ?

कमल : ठीक कह रहा हूँ। आगे बोलिए।

कामिनी : अच्छा लौंग का क्या रेट है ?

कमल : वह भी चार रुपये किलो।

कामिनी : देखिए, आप मजाक कर रहे हैं।

कमल : भला आपसे मजाक करूँगा। दुकान में मिर्च की झाग उड़ रही है। मजाक करना बिलकुल असंभव है।

कामिनी : लगता है कि मसाले का रेट बहुत डाउन हो गया है।

कमल : नहीं मेम साहब, हमारे पास कुछ पुराना स्टाक पड़ा है। उसे ही निकाल देना चाहते हैं।

कामिनी : कहीं माल खराब तो नहीं हो गया है ?

कमल : नहीं, बिलकुल ठीक है। अभी मिर्च का कनस्तर खोला है। झाग के मारे लगातार छींक रहा हूँ। **(छींकने की आवाज)**

कामिनी : अच्छा मि. केसरी, हरेक मसाला एक-एक किलो—नहीं-नहीं दो-दो किलो भेज दीजिए।

कमल : देखिए मेम साहब, सेल का माल है। पाँच-पाँच किलो का पैकेट भेज देता हूँ। कुछ दिनों की छुट्टी हो जाएगी।

कामिनी : वैसे आपकी दुकान में कब तक सेल चलेगा। मैं अपनी

फ्रेंड दामिनी को भी खबर कर रही हूँ।

कमल : नहीं मेम साहब, ये रेट सिर्फ आपके लिए। ये रेट सबको नहीं दे सकते।

[संगीत वादन।]

4

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

कामिनी : हलो!

उधर से आवाज : आप किसको चाहती हैं?

कामिनी : मैं सिक्स-टू-जीरो से कामिनी बोल रही हूँ। देखिए कुकिंग गैस खत्म होने वाली है। शाम तक सिलेंडर भेज दीजिए।

कमल : **(आवाज बदल कर)** अभी भेज दूँ तो कोई हर्ज है।

कामिनी : लगता है कि अभी थोड़ी गैस है, शाम तक चलेगी।

कमल : मेम साहब, एक सिलेंडर भिजवा देता हूँ। खाली सिलेंडर कल उठवा लूँगा।

कामिनी : यह तो बड़ी अच्छी बात है।

कमल : मेम साहब, आप पुरानी कस्टमर हैं। आपको विशेष सुविधा देनी ही पड़ेगी।

[संगीत वादन।]

5

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

कामिनी : हलो! हलो!

उधर से आवाज : कहिए आप क्या चाहती हैं?

कामिनी : मैं सिक्स-टू-जीरो से कामिनी बोल रही हूँ। आपके हॉल में कौन-सी पिक्चर चल रही है ?

कमल : आप किस हॉल के बारे में पूछ रही हैं ?

कामिनी : आप रूपम टाकिज से बोल रहे हैं न ?

कमल : हाँ-हाँ, मैं रूपम से बोल रहा हूँ। सुबह के शो में बच्चों की पिक्चर चल रही है—छोटू और मोटू।

कामिनी : आप अजीब आदमी हैं। मैं इवनिंग शो के बारे में पूछ रही हूँ।

कमल : मेम साहब, इवनिंग शो में एक एडल्ट पिक्चर है।

कामिनी : देखिए, मैं पूरी तरह एडल्ट हूँ।

कमल : पिक्चर का नाम है—रात की रानी, दिन का राजा।

कामिनी : आपके ख्याल में कैसी पिक्चर है ?

कमल : खूब हँसाने वाली पिक्चर है। लेकिन टिकट मिलना मुश्किल है। सिर्फ बॉक्स में सीट है।

कामिनी : देखिए, मेरे लिए एक सीट रिजर्व कर लीजिए।

कमल : मेम साहब, छोटा-से-छोटा बॉक्स दो सीट का है। आपको दो सीट लेनी होगी।

कामिनी : मैं अकेली हूँ। दो सीट लेकर क्या करूँगी।

कमल : तब आप चिल्ड्रेन फिल्म देख लीजिए। छोटू और मोटू।

कामिनी : आप अजीब मसखरे आदमी हैं। कह तो दिया कि मैं एडल्ट हूँ।

कमल : देखिए मिस कामिनी, एक सज्जन बॉक्स की सिंगिल सीट चाहते हैं। कहिए तो दूसरी सीट उनको दे दूँ।

कामिनी : बशर्ते कि वह सज्जन हों।

कमल : बहुत सज्जन हैं। लड़कियों की तरफ तो सिर उठाकर भी नहीं देखते।

कामिनी : बहुत बातूनी तो नहीं हैं न ?

कमल : नहीं-नहीं, उनके मुँह में तो जबान ही नहीं है। लड़कियों को देखकर बेहद नरवस हो जाते हैं।

कामिनी : कहीं सिगरेट-विगरेट तो नहीं पीते ?

कमल : नहीं-नहीं, सिगरेट तो उनके खानदान में किसी ने नहीं पी है।

कामिनी : क्या नाम है उनका ?

कमल : उनको लोग कमल कृष्ण कहते हैं।

कामिनी : कमल कृष्ण! नौनसैंस! मैं समझ गई। आप कमल जी खुद इतनी देर से बातें बना रहे हैं।

कमल : क्या कहूँ मिस कामिनी। शायर ने कहा है—
छोड़ा नहीं इश्क ने कि तेरे घर का नाम लूँ,
हर एक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं।

कामिनी : देखिए मि. कमल, न शायरी से कुछ फायदा है, न चेज करने से ही कुछ मिलेगा।

कमल : गलती मेरी नहीं है। पिछले तीन दिनों से हम लोगों का फोन टैग्ड हो गया था।

कामिनी : लेकिन मैंने कई जगह फोन किया था।

कमल : हर बार इसी नाचीज ने फोन उठाया था। हर बार इसी खादिम ने खिदमत की है।

कामिनी : कहीं यह भी आपकी ही कोई तिकड़म तो नहीं थी।

कमल : ईश्वर की यही इच्छा थी। मिस कामिनी, मैं तो बेहद भला आदमी हूँ।

कामिनी : यह तो मैं अच्छी तरह जानती हूँ।

कमल : देखिए कामिनी जी, हर जुर्म की सजा होती है। और हर सजा की अपील होती है।

[संगीत वादन।]

6

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

उधर से आवाज : हलो!

कामिनी : अरी दम्मो, मैं कामिनी बोल रही हूँ।

दामिनी : क्यूँ रे, पिछले तीन दिन से तू किससे बात कर रही थी। कितनी बार फोन लगाया। हर बार 'एनगेज्ड' का सिगनल मिला।

कामिनी : माई डीयर दम्मो, मेरा फोन एक दूसरे फोन के साथ फँस गया था। बड़ी मुसीबत हो गई थी।

दामिनी : क्यूँ रे, वह भाग्यवान कौन था?

कामिनी : छोड़ उस बात को। धीरे-धीरे सब मालूम हो जाएगा।

दामिनी : क्यूँ रे, लोग तेरे बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। क़ामिनी-कमल, कमल-कामिनी—कुछ इसी तरह की बातें।

कामिनी : लोग ठीक कहते हैं। हम लोग अपना 'एनगेजमेंट' एनाउंस करने जा रहे हैं।

दामिनी : बधाई! बधाई! देख कम्मो, मैंने तो पहले ही कह दिया था।

कामिनी : चल झूठी, अब बात बना रही है।

दामिनी : लेकिन मेरी प्यारी बुलबुल, यह सब हुआ कैसे?

कामिनी : जैसे होता है। मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि मैं शादी करूँगी तो फोन वाले से।

दामिनी : हाँ, तूने यह तो जरूर कहा था।

कामिनी : देख दम्मो, मेरी कुछ शर्तें थीं। कमल उन सभी शर्तों को पूरी करता है।

दामिनी : सचमुच कमाल है।

कामिनी : मैंने उसको ट्रेन का टाइम पता करने को कहा। उसने पंद्रह मिनट में पूरा टाइम टेबुल भेज दिया।

दामिनी : वेरी गुड!

कामिनी : मुझे राशन की जरूरत थी। वह तीस मिनट में सभी राशन आधे रेट पर ले आया।

दामिनी : वेरी-वेरी गुड!

कामिनी : वह कुकिंग गैस स्टेशन गया। एक के बजाय दो सिलेंडर ले आया।

दामिनी : हीयर-हीयर! थ्री चीयरस!

कामिनी : सिनेमा में हाउस फुल था। इसके बावजूद वह दो टिकट ले आया। इंटरवल में दो बढ़िया आइसक्रीम का आर्डर दे आया।

दामिनी : तो यूँ कह कि मेरी बन्नो दो आइसक्रीम पर बिक गई।

कामिनी : अरी चुप तो रह! कमल ने स्वयंवर की सभी शर्तें पूरी कीं। बस मैंने कह दिया—येस!

दामिनी : क्यूँ रे सुनती हूँ कि कमल बहुत सिगरेट पीता है।

कामिनी : इतिहास में ऐसा जिक्र है। उसने कहा है कि अगले पूरे पाँच साल वह सिगरेट नहीं पियेगा।

दामिनी : कम्मो, कमल को बिना वक्त शायरी सुनाने की बुरी आदत है।

कामिनी : मुझे रामायण की चौपाइयाँ बहुत याद हैं। जहाँ उसने शेर कहने की जुर्रत की मैं एक चौपाई जड़ दूँगी।

दामिनी : अरे बुलबुल, सुनती हूँ कि तेरा फोन कमल के साथ 'टैग्ड' हो गया था।

कामिनी : दम्मो, दो फोन के बीच ऐसी टेक्निकल गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। इसीलिए अगले महीने मैं अपना फोन कटवा दे रही हूँ।

[दोनों हँसती हैं।]

[पटाक्षेप]

□□

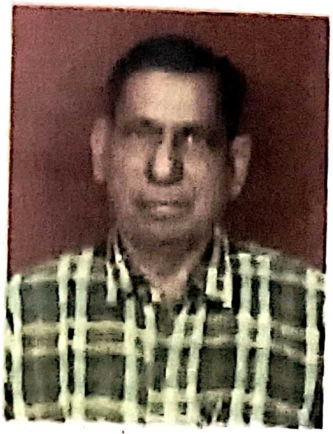

श्याम मोहन अस्थाना

जन्म : 29 अक्टूबर, 1924।

वाराणसी के एक मध्यम वर्ग के परिवार में। शुरू से ही विद्रोही प्रकृति के कारण 1942 के राष्ट्रीय आन्दोलन से 1974-75 के बिहार जनआन्दोलन तक सक्रिय भूमिका।

लेखकीय विधा : कविता, नाटक और सामाजिक, राजनीतिक निबंध।

नाट्य रचनाएँ

पूर्व और पश्चिम (1963) (पूर्ण कालिक), खरीदा हुआ चेहरा (1983) (एकांकी संग्रह), नागफनी की डाल (1983) (एकांकी संग्रह), धीरे बहो गंगा (1989) (एकांकी संग्रह), आदिम अग्नि (1989) (एकांकी संग्रह), रावण तेरे रूप अनेक (1989) (पूर्ण कालिक), बीवियों की हड़ताल (1996) (प्रहसनों का संग्रह), दूसरी सृष्टि, शाप ग्रस्त, नारद जी चुनाव के चक्कर में (बाल नाटक), बुद्धम् शरणम् गच्छामि, मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?

सम्पर्क : मानसरोवर कालोनी, अस्पताल रोड, आरा (बिहार) पिन : 802301